॥ अथ मंगलपद लिख्यते ॥ राग रामग्री राग मंगल मंगल व्रजभुवि मंगल ॥
ध्रुव ॥ मंगलमेंह श्रीनंदयसोदानामसुकीर्त्तिमेतद्रुचि
रोत्संगसुलालितपालितरूपं ॥१॥ श्री श्री कृस्नइतिश्रु
तिसारं नामस्वार्त्तजनाशयतापापहमिति मंगलरावं
व्रजसुंदरीवयस्यसुरभीवृंदमृगीगणनिरुपमभावा मं

गलसिंधुचया ॥२॥ मंगलमीषास्मितयुतमीक्षणं
नाथस्यामुन्नलनासापुटगतमुक्ताफलचलनं ॥ को
मलचलदंगुलिदलसंगतवेणुनिनादविमोहित
वृंदावनभुविजाता ॥३॥ मंगलमखिलंगोपीशि
तुरतिमंथरगतिविभ्रममोहितरासस्थितमोन
त्वंजयसततंगोवर्द्धनधरपालयनिजदासानध
॥ याको अर्थ ॥ व्रजभूमिविषेंजेमंगलहैंते
मंगलकल्याण ॥ काहूंकोमंगलरूपहैं ॥ सोकौनत
हांप्रथमहितोश्रीव्रजराजजाश्रीव्रजरानीजीको
नामकीर्तनतेंमंगल ॥ तथाइनकेसुंदरगोदमेंजि
नकोंलाडकरावतहैं ॥ पालतहैं ॥ ऐसेजोप्रभुनको
स्वरूपसोमंगल ॥१॥ तथाश्रीहरि ॥ ऐसोजेवेदको
सारभूतनाममंगल ॥ [illegible]हैतनां ॥ स्वकीयजनजे
॥ आर्त्तहैं ॥ तिनकोंदुःखकेतापसमावतहैं ॥ तेनां
मकीर्तनमंगलहैंयातें ॥ तथाव्रजभक्तसखागायहै
रली ॥ इनकेंजेगणहैंसमूह ॥ तिनकेंजेअनू
पमभावहैं ॥ तेंमंगलसमुद्रकेसमूहहैं ॥ यातें ॥२॥ त
थाथोडोजेमंदहास्यसहित ॥ भगवत्कृतदेखिबोवो
लिबोसोमंगलहैं ॥ तथाप्रभुनकेंनासिकाकेमु
क्ताराजेमोती ॥ ताकोहालिबोतेमंगलहैं ॥ तथाको
मलचंचलअंगुलिदलतिनसोंमिल्योहैं ॥ जोवे
णुताकेनादसोंमोहितभएहैं ॥ ऐसेजेवृंदावनके
पसुपंषीवृक्षादिकतेंमंगलहैं ॥३॥ तथागोपीप
तिजेप्रभुतिनकोजोनिमंगलपटमंदजगति
ताकेविलासमोहितजेरासलीलास्थितवृजभ
क्त ॥ तिनकोकीयाजोगानतेंसंपूर्णमंगलहैं ॥ तातें

मंग
१०५

जेइन मंगलपदार्थनकौ स्मरण करतहै। एसेजे
तुह्मारे दास॥ तिनकी रक्षा करो। तथाश्रीगोवर्द्धन
धर आप सर्वदा विराजो॥ यह श्रीगुसांईजी विज्ञ
प्ति करतहैं॥ यह जो मंगलगीत श्रीगुसांईजीने प्र
कट कियोहै॥ याको जो नित्य पाठ करैतो मंगलरूप
भगवान वाके हृदयमें आइके सर्व मंगलकुं करैं॥ ध॥
॥ इति श्रीगुसांईजीकृत पद्यविवरणं॥ श्री
कृष्णायनमः अथ पालनाकी टीका लिख्यते॥
॥ प्रेखपर्यंककी टीका॥ श्रीगुसांईजी श्रीठाकुर
जीसों प्रार्थना करतहैं। हे प्रभो पेखपर्यंकसयन
प्रेखजो पलना सांईजोसे या॥ तामें हे सयनकहे
पोढनो जिनकहे ताको अर्थ कहा॥ अहो पलना
मेंपोढप्रभु॥ अपनो जो सर्वे पई लाकहे कृपा
दृष्टि ताकौ तुमप्रगट करो हमकुं परकृपा दृष्टि करो
कृपादृष्टि तुह्मारी कैसीहै॥ बहुत कालकौ तुह्मा
रो विरहके भयोजो तापताकहो। दूरि करतहै॥ अ
रु कृपादृष्टि कैसी है। अति सुंदर है॥ ताकहे तुमकौ
मोऊपर प्रगट करो और तुम कैसे हो॥ अहो प्रेमा
यम प्रमलुम लिखे है॥ धू और कहतहैं जो प्रभु के
अति छोटे दांतनकी पांतिजो॥ हसतमें प्रगट हो
तहैं॥ औ सो परमसुंदर जो तुमारे हास्य तिनकों हम
देखिकें विचारतहैं॥ जो तुमारे संबंधी तुम्हारे पा
स॥ गानके करणवारे जे व्रजभक्त तिनकों अवतां
ईयही॥ आसा करजी बनो नयोजो प्रभु प्रगट होय
य पालनेंमूल हिंगे तव हमआपसें हसतदेखहिंगे
जें॥ जामें अति छोटे दांतनकी पांति प्रगट होत

हैं ॥ ऐसे परमसुंदर हास्यदेखहुंगे ॥ या भांतिकी
प्रार्थना करिकें नंदकौं जीवनो भयो ॥ १ ॥ और अहो
प्रभू तुमारो स्वरूप मेंतो बालकभाव विराजतहैं औ
र दृष्टि मेंतो मद युक्त जे मानवती स्त्री तिनकें मान
कौं हरनों विराजतहै ॥ ताकौ अर्थ कहा ॥ अब ही
तुमारें बाल्य अवस्थाई में तुमारी दृष्टि देखिकें
॥ स्त्रीनकौ मद मान छूटतहैं ॥ तो आगें वयक्रम
में कौंन जानें कहा होनो है ॥ कहा कांमरूप करि अप
नें गोपीजनकौ जो भाव ॥ स्त्री भाव ताकौ करनौ कहा
होनो है ॥ ताकौ अर्थ कहा आगिले वयक्रम में तु
मारी दृष्टि देखिकें कहा आसक्तजनको हम हूंकौ कहा
स्त्री भाव उपजेगो ॥ जो मेरा [illegible] भाग करेंगे या भां
ति ऐसो तुम्हारो स्वरूप है ॥ और कहें प्रभु हम यों
जानतहैं ॥ ब्रजकी स्त्रीनके वक्षःस्थल ही जो
सुवर्णमय पर्वत तिनकों विचार व चढिवेके हेतु ॥ तुमा
री चरणकमल ऊंचे रहे हैं ॥ ताहीतें हे नाथ अब
ही कोमल कोमल ऐसे दोऊ चरणकमल बारंबार
ऊंचें ऊंचें होंनेजो धर्म ताकें ॥ अभ्यासकें तांहीं प्रग
टकरतहैं ॥ ताकौ अर्थ कहा ॥ जैसें काहूकौं आगें ॥
ऊंचो चढनो होइ ॥ ता पहिलें अभ्यास करें ॥ ता भां
ति तुमारें चरणकमल ऊंचे ओर रहतहैं सो जानु
ब्रजस्त्रीनके वक्षस्थल रूप जो सुवर्णमय पर्वत ति
निऊपर आगें चढनो है यातें ॥ २ ॥ और कहतहैं
जो हे प्रभु तुमारे गोरोचनके तिलक ऊपर अलका
वलीमें गूंथ्यो मोतिनां ति मध्यमो तिलसौ बनायो
॥ आभूषण लटकन सोहतहै ॥ सो कहा है मां

नो॥ सुंदरतारूप जो अंमृत ताकौ आस्वादक ताकौ चुंब-
नवारो ऐसो जो मुखचंद्र तातैं चू बोई॥ एकठोरा सुं-
दर तासरूपसही है मानो और कहे हैं प्रभु म्हारा नोहै उप-
रमाता करवनाया जो अंजनकौ बिंदु डिठौनासौ तुमा-
रे स्वरूपकी अत्यंत सोभा देखकै॥ भक्तनके और-
नके दृष्टि कौ जो दोष है ताकौ दूरि करत॥ और तुममें
स्नेह युक्त हौ॥ तिनकौ सुख उपजावत अत्यंत सोभि-
त है॥ कौनभांति सो भित है मानो पुष्परूप कामकौ
धनुष ताऊपर मकरंदकौ पानकरत मानौ भ्रमरराज
बैठ्यो है॥५॥ और कहे हैं प्रभू हम यह मांगत हैं जो तु-
मारे भांति भांति को जो बचन [illegible] रचना॥ और उप-
दारथ हार हास और सब [illegible] पर ईजे अमृत-
सम दूति नकर॥ सब [illegible] को जो आर्ति है ताकौ
तुम दूर करत हौ॥ [illegible] जो आदि छलमय
ता विषैं अपनौ [illegible] प्रगट करत सदा हमारी पा-
लनाकरो॥ यह [illegible] करत हौ॥६॥ इति श्री पा-
जनाकी अष्टपदी ताकी भावनासंपूर्ण॥ अब
पवसंतकी अष्टपदी लिख्यते॥ हारिरिह व्रज-
नजुवती॥ध्रु॥ टीका सखी श्री स्वामिनीजी कौं ठाकुर
जीसौं रमणकी उत्कंठा प्रगट करत है॥ ठाकुर या वृंदा
वनमें अनेक॥ व्रजभक्तनकें संग॥ कैसें हैं जाकें देखे
तैं कामहूकैं॥ सुंदरताकौ मान जाय ऐसे व्रजभक्तन-
कें संग श्री ठाकुरजी विलास करत हैं कौन भांति॥ जै-
सें श्रेष्ठ हाथी हथिनीनके समूहसौं मिलि जैसें वि-
लास करै ता भांति॥ध्रु॥ सखी कहत है व्रजभक्तनसौं
विलासकें जो उत्साह॥ तिनकरि चंचल जो नेत्र तिन-

करि जतायो है ॥ आपनो येक नेरो कीयो भाव जिनने
कहि ऐसे श्री ठाकुरजी ॥ और कैसे है ॥ अव्यक्त मधुर
है राव जिनको ऐसे जो श्री ठाकुरजी तिनको ॥ कोई
एक ब्रजभक्त अपने कटाक्ष लक्ष जो स्याम कमल
को समूह तिनकरि पूजित है ॥ १ ॥ मंदहास्यकी
है क्रांति जामे ऐसे अतिसुंदर जो रमणको समूह
लक्ष जामे भांति भांतिके रमण है ॥ ऐसे जो श्री ठाकु
रको मुखकमल ॥ ताको उंची दृष्टिसों देखिके
वेगही कोई येक ब्रजभक्त करतलसों श्री ठाकुरजी
की ठोडी पकरिके ॥ मुखकमलमें चुंबन करत है
२ ॥ ऐसे जे प्रभु कैसे है ॥ उदट मर्यादरहित जो
कामभाव ॥ ताकरि प्रगट करी जो चंचलता ताकरि
मोहित करनवारे ॥ प्रेर[illegible]में जिनको अति
स्वभाव है ॥ ऐसे प्रभु और कैसे है ॥ भारे आरंभि
लेजो ब्रजभक्त तिनके स्तन ॥ तिनसों भिडि गई है वन
माला जिनकी ऐसे प्रभु तब कोई एक ब्रजभक्तनको
रमण सिद्धि करत है ३ ॥ सखी कहति है श्री स्वामि
नीजी सो ॥ कोई येक ब्रजभक्त अपने आलिंगन
के जोये ॥ ऐसे आवत विलाससहित श्री ठाकुरजी
को देखि हंसि के ॥ कौतुककरि कोई एक ब्रजभक्त
नको बलात्कार अपने आगे करत नाप ॥ ४ ॥ सखी
श्री स्वामिनीजी सो कहत है ॥ श्री ठाकुरजी कोई ए
क भक्तनको रमण सिद्धि करत है ॥ वैसे ही ब्रजभक्त श्री
ठाकुरजी करि कीयो जो साडीको बंधको छोडनो ॥
ताकरि उत्साहसहित और लज्जायुक्त है नेत्र जिन
के ॥ और अपने करतलकरिके पकडि राखे है

अष्ट: अपनो बस्त्र जिन कारि ॥ असो कोई एक ब्रजभक्त
१०६ नसों बलात्कार श्री ठाकुरजी ॥ ओ नरमन करत हैं ॥
५ ॥ सखी कहति है ॥ श्री स्वामिनीजी सों ॥ और कोई
एक ब्रजभक्त श्री ठाकुरजी सों मिलिकें उचैं स्वरसों गा
न करत हैं ॥ कैसे ब्रजभक्त ॥ श्री ठाकुरजी करिकें पायो जो
आलिंगन ॥ तिनकरि भई जो बहुत रोमांच की पांति
ताकरि दुगनो भयो है सुंदर सरीर जिनको ॥ और रम
णस्सी रूमन तामें धीर ॥ असी जो कोई एक सखी सो
श्री ठाकुरजी सों मिलिकें उचे स्वरसों गान करत हैं ॥ ६ ॥ स
खी कहत हैं श्री स्वामिनीजी सों ॥ और कोई एक ब्रजभक्त
नकों जो उदार अंग स्तन स्वरूप केसों ॥ श्री ठाकुरजी सों जो वि
लास तामें जो उत्साह ॥ ताकरि [illegible] यो हैं ॥ अंचनजा
ते ॥ और चंदनजा कहत [illegible] जो कोई एक ब्रज
भक्तनको अस्तनस्पर्श ॥ ताते श्री ठाकुरजी विक
रसहित होई ॥ तमाल [illegible] पुष्प जो मनताके
रदे खत हे ॥ ७ ॥ सखी कहत है श्री स्वामिनीजी सूं ॥
और कोई एक ब्रजभक्तनसों मिलि उनको हाथप
कडि अति अलसानें होइ ॥ विलास सहित चलत
हैं ॥ तहां सखी कहत हें राधे ॥ यह जो में श्री ठाकु
रजी को रससमूह कह्यो सो तुमारो मनोरथ पूरो
यह सखी कहत है ॥ ८ ॥ इति श्री वसंत की अष्ट
पदी की टीका संपूर्ण: ॥ जो वांचे ताकुं जेसी
कृस्न ॥ लिखतं म श्री गोकुल मध्ये नंददास ब्राह्मण
श्री गोकुलनाथजी सहाय: ॥ ॥

दा-टी ॥श्रीकृष्णायनमः॥ अथश्रीदानलीलाकीटीकाभाषामें
लिखियतुहै॥श्लोक॥ मुदाचंद्रावल्याकुशमश्रायनीयादि
चितुंसुहासंप्रोक्ताः स्वप्रणयिसहचर्यःप्रमुदिताः निकुं
जेषून्योन्यंकृतविविधतल्पेषुसरसांकथांस्वस्वामिन्याः
सपदिकथयंतिप्रियतमा १ याकोअर्थ श्रीठाकुरजीकी
जोसखीहैं जोश्रीस्वामिनीजीपासन्यारीन्यारीजातहैं तिन
सखीप्रत्यें श्रीचंद्रावलीजूनें हर्षसंयुक्तहसिकरिकें कह्योजो
तुमजायकें फूलकीसेयारचनांकरो तबसखीहूंसोहरषसें
युक्तहोयकरिकें निकुंजविषेंपरस्परकीसखीनभांतिभांति
कीफूलनकीसेयारचनांसोकरतहैं सोआपनीआपनीश्री
स्वामिनीजीकीओरससंबंधीजोकथासोताकोलहीकहलभ
ई सोएकैसीहैं तेकथाअत्यंतप्रियपरमहैं १ श्लोक अथराव
सुकृतात्यैरखिलमंगलैर्घसमनोरथसतैःसदामन
सिभावितैर्निर्मिते अत्यन्ताभिमनोहरे निजगहाद्विहारेछ
यासखीव्रातलबतान्वचला कुंजवनेषुचंद्रावली २ याकोअ
र्थ कोऊएकभाग्यपतिजहांतहीपुन्यपुंजहै तेउदयभयोजाब
होतमंगल कोऊएकभाग्यरूपीअलौकिक विधाताकरि
कैअसंख्यामनोरथकरिकें जोसदामनविषेंजोभावनां
करिभागपविधातानेंनिर्म्यौदिन सोकैसोदिनजोअत्यंतम
नोहर तादिनविषेंश्रीचंद्रावलीजूआपनेघरतेंविहारकी
इछाकरिकें सोअसंख्यातसखीनकेजूथसोंआवतव्रज
केबनविषेंश्रीचंद्रावलीजूचलतभई २ श्लोक समुद्ग्र
थिलमालतीकुरुवकादिपुष्पावलीगलत्परिमलोन्मदभ्र
मरयूथसन्नादितं उदारमतिचित्रितंमगमदादिभि
र्बिभ्रतीमनोभवमदायहंकमपिकेशपाससखि ३ याको
अर्थ तोकेसीहैंतेश्रीचंद्रावलीजू जोनीकीप्रकारगांथीमा
लतीकुरुवकआदिकेफूलकीपंक्ति ताफूलनें

सुगंधपरिमल तातेंउन्मत्त भएहें जो पियारीनके जूथसों
गुंजार झंकार करतहे औरउत्पंलउ हारहें अत्यंतवि
चित्रचित्रितकीयेहें भांतिभांतिके पुष्पकस्तूरीआदिकरि
केसषीबेणीकूं धरतहे केसीहेबेणी कंदर्पके मदगर्वकूं
दूरिकरतहे कंदर्परसदर्पदेषतमात्रषलितहोतहे ए
सोकोऊएकअनिर्वचनीय केशपासहे हेंसषीएकेश
पासहे केनायककेमनकीफांसीहे ३ श्लोक स्पामेदोरनु
रूपांविधिरचितां तारकामहमन्पे यतत्करनखकिरा
णानजालुसरव्यस्त्पंजंतीमं ४ याकोअर्थ स्पामेदोऊजो
श्रीहस्ततिनकेंवरावररूप विधातारचनाकीनीजोता
रकांतारागणजोपुष्पवेंणी पवेंयहहोंमांनतहूं जाले
श्रीठाकुरजीकेहस्तकमल तेनषकिरण कदापिहेंस
षीत्यजतनांहीश्रीठाकुरजी ५ श्लोक कुंकुममृगमद
मलयजचित्रितकुसुमतासीयधम्मिल्ले नोकिंतुकुसु
मधनुषस्तूणीरसज्जीविधना ५ याकोअर्थ केसरि
करिकेंमलयजकरिकस्तूरीकरिकें विचित्रचित्रित
कीनेहें पुष्पतिनकीवेणीकेसों वेंणीपुष्पकरिचित्रित
नांहीकीनीतोकहाहे विधातानेयहपुष्पकेबाणकेभाथा
भरेहें तहांकहतहे धम्मिल्लजोबेणीसोनहोयकोऊए
कसौदर्यअमलस्पाममधकेयहसमूहहें औरयहपु
ष्पनांहीगूंथेतोकहाहे ५ श्लोक नधम्मिल्लोयोगध्यामत
जलमुचामेषनिचयोनपुष्पाणी यानिछिदत्रापतिमौ
वीपरिणोतिः नमुक्तागुच्छानिप्रकटसुखमांभःकणभरो
नकास्मीरोद्भूतासुभगतररेखाताडिद्दियं ६ याकोअर्थ
मानुमांनतहूंत्रिलोकीकोंपतिजोइंद्र ताकोअन्द्रधनुक
[illegible] आपलीहे मांनो औरसुंदरएते विश्रोषणकरि
[illegible] ओअलककुंतलकीजोपंक्ति सोमुषकमल

दो-टी केऊपरआगेंपाछेंधरनसोभायमांनजोकमलनयनीजो
श्रीचंद्रावलीजू औरदूमोतीनकेगुछाकूंमकानहोय
यहकोऊएकसुषकरिकेंसोभाकीजलकलिकाकोभरहे
सोषमां सोसोभा औरयहकछूककरतेंप्रगटहेउदेम
ई सुंदरतररेषानहोयतौकहाहे यहबिजुलीहे ६ श्लो
क निसर्गसुंदरोप्यालिसत्रचित्रांबरांतरे गूढोभावद्र
वैतस्या: सोदृडेस्पतविलक्षण: ७ याकोअर्थे यहहेंसोह
आलीसहजसुंदरहे निसर्गकहेंसहजस्वाभाविकसोद
येताकछूसिंगारभूषणादिकतेनांहीभई यहजोसहज
सुंदरताहे सोहेसषीनीविचित्रवस्त्रकेअंतरकेभीतरइ
नकोस्त्रीभावगूढइनकोगूढभावहीहे सोविलक्षण
जाहसोदेषियतुहे ७ श्लोक यासमर्पितसिंदूररेखोपरि
परिस्फुरिता मुक्ताफलावलीमाति सीमंतेविभ्रतीवभौ ८
याकोअर्थ अवकहतहेंजो यहजामेंजोसमर्प्योसिंदू
रकीरेषाकहिये सोमाथेमेमांगभरीहे फिरिताऊपर
जास्थितिहेमोतीकीपंक्तिकीमालामांगसोसीमंतविषेंध
रतहोतभई ८ श्लोक नसासिंदूररेखालिमुक्ताहारयुता
पितु सफेनराजिराभातिपूर: सौभाग्यवारिधे: ९ याको
अर्थ सोहेआलीसोतेंसिंदूरकीरेषानहोय जदपिमोति
नकेंहारयुक्तहे सोफूलींताकहाहे मोतीनहोइसोफेनकी
पंक्तिप्रकटभासतहे सोदेषियतुहे जाकोऊएकपरम
सौभाग्यकेमहासमुद्रकोपूररेलहेआईहे सिंदूररेषा
नहोय यहसौभाग्यकेमहासमुद्रकोपूररेलहेऔरता
परमोतीकीमालानहोय यहआसमुद्रकीरेलपरफेन
हें ९ श्लोक बदनसुधाकरकिरणप्रसतेमुक्तातततरिदं
चित्रं यत्कचनिचयतमोपिप्रियसखि सततं [illegible]रागति
१० याकोअर्थ औरकहतहेंजो बदनर [illegible] ाकरचं

द्रमाताकीकिरणऊपरकूंफेलेहेंप्रस्नेहे सोएमुक्तामाला
मांगनहोय यहबदनचंद्रकीकिरणऊपरकूंफेलीहें ते
यहबडोआश्चर्यहे अद्भुतउपमांजोजानेहें प्रियसषीजा
नेकेसपासस्याम समूहअंधकारहूनिरंतरप्रकासमां
नप्रकटहीरहतहें नहीतोचंद्राकिरणअंधकारकूंनां
शहरिकरतहे ओर यहकचतम किरणकेरहतहूप्र
कासमांनप्रकटहीरहतहे यहबडोआश्चर्यअद्भुतउप
माहे १० श्लोक सुस्निग्धामलकुंचितमेचकश्रुभगालका
वलीतरुणी बदनांबुजस्यपरितोदधतीरजेसरोजाक्षी
११ याकोअर्थ हेतरुणीसषीसुंदरओररसचिकनओरनि
र्मलकेवलस्याम ओर निरमलओरटेढे घूंघरवारेओ
रअत्यंतस्यामसषा ओर सुंदर ऐसे विशेषणकरिसुं
दरहे ऐसेजोअलककुंतल [illegible] जोपंक्तिसोमुषक
मलकेऊपरआगेपाछेंविधि [illegible] धरतसोभायमानेहें जो
कमलनयनीजोश्रीचंद्रावलीसो ११ श्लोक ईषद्धासविका
सविभ्रमगलद्धर्मांबु [illegible] मधुनानांभोजस्फलकषयदा
लिरमलाम [illegible] धारवि यत्स्वाभाविकसाकृतीरपि
मुदाविस्मृत्यनित्यां [illegible] त्पस्पदंतद्दिदविभातिभुवनेपके
रुहास्यमद्भुतं १२ याकोअर्थ श्रीचंद्रावलीजीकीसषीश्रीरा
धाजीकीसषीप्रत्येंकहतहेंजो हेश्रीराधाजीकीसषीसंबो
धनश्रीचंद्रावलीजीकोमुषकमलकेसोहे जोथोडोसोश्रृं
गाररसकोपुष्टकरतहे ओरहासकेविकासप्रागटता
ईषद्हासविकासकेहाररसजोकामभावकोसूचकता
ऐसेहास्यमेंतेजोकोटिलावण्यकोमधुमकरंदचोवतहे
झरतहे हास्यविलासकरतजोमुषकमलचूवतहे झर
तहे सो [illegible] ताउपटिचिलत चुंचुवातहे ऐसेमुषकमल
ऊपर [illegible] अलकजोस्वच्छिकण निर्मल घूंघरवारेओ

दं.टी. रस्यामजोअलकसोभा अलकनहोयतोकहाहे ईषदहा
सविकासविलासतेजोकोऊ एकमुषकमलतेंलावण्या
मृतमधुजोचुवतहे ताहांपाम्राकेंजोभ्रमरीनिर्मलम
तहूहे श्रीराधाजूकीसषीज्यातेंभ्रमरकोसहजस्वाभावि
कहंकारहूअत्यंतहर्षकरिकेविस्मर्णहोयकरिकें वह
लावण्यामृतमधुमकरंदकूंनित्यपीवतहे विभातियहसे
सार --- वनविषेत्रिभुवनविषेंपंकेरूहरूपकमल
नयनीजोश्रीचंद्रावलीजूअद्भुतदेषियतुहे १२ श्लोक नै
तन्मुखं प्रियायाराकापतिरेवराजतेविमलः नैयकुंतल
मालासुखमामुग्धाःसखीदृशांतारा १३ याकोअर्थ अब
कहतहेंजो यहश्रीप्रियाजूकोमुषनांहीतोकहाहे यहसर
दमांसीकोराकापतिपूर्णचंद्रमांहीनिर्मलविराजतहे
औरयहकुंतलचूरणांकीमालापंक्तिनहोयतोकहाहे यह
अत्यंतसोभाकरिकेंसषीनकेंनेत्रकेस्यामतारेमूढहो
यलागरहेहें सोभावैषतोनांहीमूढहोयलागिरहेहें
१३ श्लोक सकमलयमुनातरलोद्भूतानिलजातकंपित
व्याजात् कंदर्पो [illegible] भामलकचयोर्प्रतिरस्कुरुते १४
याकोअर्थ कमलसहितश्रीयमुनाजीकेतटतेंउद्भूतप्र
कटभयोजोवायताकरिकेंनयोजोअलकोंकुंकंप सोकंप
नांही कंपकोमिसकरिकेंकोटिकंदर्पकामकीसोभाहेयह
निर्मलअलककोसमूहहे सोतिरस्कारकरतहे १४ श्लोक
चित्रालेभालेहीरकमणिगणखचितस्फुरन्मुक्ताप्रो
तं तिलकमलकाक्रांतिरुचिरं ललाटस्थंग्रेरंवमृगमद
मयंदीपकलिकानिभं सिंदूरस्य प्रियसखिततश्चारुद
धती १५ याकोअर्थ चित्रालललाटताविषेंहीराओर
छोटेछोटेलालमांनिकसमूहकुंदनकरिकेंजटितआगें
पाछेंसब ओरदेदीप्यमांनमोतीपोयेहें ऐसोतिलकदी

लीला विषेसुंदर अलककी अंतकरिकें आक्रांत भाल
है तदनंतर तिरछी रेखा आड केवलस्याम कस्तूरी की
नी हैं और दीवाकी कलीवाकी बराबर सिंदूरकी टीली है
हे प्रियसखी तदनंतर सुंदर सिंदूरकी टीली है सबसुंदर
होयते सें धरत भई १५ श्लोक जे मुक्तामया विंदु कस्तू
री तिलकांतरे चलत्कादंबिनी राजराकापतिरिवामल:
१६ याको अर्थ और कस्तूरी के तिलक आडके भीतर विषें एक
ले मोती को चांदलो सो भितु है सो कैसो कैसो लागतु है जो
नें कालिंदी नीलो मेहको समूह चललहोय ता विषें निर्म
ल पूर्णचंद्रमा मेघके चलत हैं जैसें सोभित होय तेसो
लागतु है १६ श्लोक नभ्रूलतासु न विलोचनेतेन विभ्रमा
स्तेसरसीरुहाक्ष्या: कौमारलीला तिलकाम मौर्वी बाणाध
नान्येव विलुंटितानि १७ याको अर्थ अब कहत हैं जो ते जो
एकभ्रुलता न होय और ते लोचन न होय और विला
स जो भ्रूभंग कटाक्ष विभ्रम सुचन विलास है हे सखी
सरसीरुहाक्षा जो कमलनयनी जो श्रीचंद्रावलीजी का
हा है कौमार लीला बाललीला में जो त्यो है जो कोटि कंदर्प
सो कंदर्प की मौरवी जो प्रत्यंचा सहित धनुष और बाण
और आसमंतात् सकल धन्य धन्य लूटला ये हैं सो है १७
श्लोक त्रिभुवन जय मद जनित त्रिवक्रता मालि विभ्रती
तद्भ्रू: मधसूदनमपि जेतु सपदि व्यग्रेव चपलास्ते १८
याको अर्थ अब श्रीचंद्रावलीजी की त्रिविक्रम भ्रुकुटी कहि
यतु है जो हे आली श्रीचंद्रावलीजी की भ्रुकुटी तास्यों लो
ककों जीत्यो है सो जयको जो मद ताकरिकें उपमा जो त्रिवि
क्रता ती नों ठौर टेढाई एकेक लोक जीते हैं एक एक ठौर
वक्रता तें त है आली त्रिविक्रता कूं धरत हैं तिनकी तेभ्र
कुटी अब मुर दैत्य के जीतनवारे कूं हूं जीतिवे कों तात्काल

टी·टी· सीभ्रूव्यग्रहस्चलतहैं तेभ्रकुटी १८ श्लोक स्तालेंमयास
खिपुरैवीबनबानुरागराको कलानिधिरेष्यतिलघ्वतीति
यतस्यकोमलकरप्रसतिःसरागानेत्रद्वयेऽतिरुचि
राप्रकटावभूव १९ याकोअर्थ अबसषीदूसरीसषीप्र
त्येंकहतहें जोहसषीमेंयहिलेंहीजांन्योंजोइनकेहृदय
भीतरनयोअनुरागरूपीजोपूर्णचंद्रमांसोइनकेहृदय
विषेंउदयभयोहे तातेंतेचंद्रमाकेकोमलनंतनअरुण
किरणप्रसरेकेलेरागसहितसोदोऊनेत्रविषेंअत्यंतसु
दरअरुणताप्रगटहोतभएहें १९ श्लोक ययास्त्रविद्य
यानंदैगोविजिभस्तांमगीदृशोअघोपदिश्यतोनेत्राचा
र्यौश्रुतिमुपगत्यानैः २० याकोअर्थ औरजोनेत्रकरअस्त्र
विद्याकरिकेंकंदर्पकूंजीत्योहें सेमृगीदृषोतेननेत्रनेंसो
हीनेत्ररूपीआचार्यआजकानके मानविषेंहलुवेंउपदेस
दिसासिखावतुहे २० श्लोक मार्गान्निजेतु चलितेदृशौत
न्मार्गावरोधेश्रवणाव्धयेवो सरोषयुन्मार्गमिव प्रचलते
वक्रांचलेरेजतुरालिसषाः २१ याकोअर्थ अवकहतहें
जोदोऊनेत्रहेंसोसर्वजउदेजगतकूंजीतिवेकूंचलेहें
तबलेनेत्रकोंसोश्रवणकूपकरिकेंमार्गविषेंअवरो
धभयोहे श्रवणपर्यंतनेत्रचले तबदोऊश्रवणकूप
करिकेंमार्गमेंरोधकीयोहे तबहेसोक्रोधसेंउन्मार्गकी
नांईवक्रलभयोमार्गकोछोडिकें उन्मार्गटेढेचले तातेंहेआ
लीसषीटेढेनेत्रकेप्रांतअंचल तातेंप्रढनेत्रप्रांतटे
ढेकटाक्षकरिकेंसोभायमानहें श्रीचंद्रावलीजीकेनेत्र
प्रांतकटाक्ष २१ श्लोक परिधापांजनकंचुकमपांगबा
णौःश्रुतिदरीसंस्थे हंतुंमदनमृगंतच्छोबनमृगयूवि
चारयतः २२ याकोअर्थ अंजनकोश्यामदकोचीयाशीका
रीटकेजीयापहेरकरिकटाक्षरूपीबाणकरिजोकामकी

गुफावीचजो छिपिरह्योहे सोमदनरूपजोमृगताकूंमा
रिवेकों तेजोआंजलोचनदोऊसोबहेडी यासोंदेउवहे
उभारिबेकोविचारकरतहे २२ श्लोक श्रवणयुगलेताटं
केस्याविचित्रमहामणिप्रकरकनप्राडुर्भूतप्रभाजित
भास्करे मदगजभवश्रीमन्मुक्ताफलैरपिमंडितेकुव
लयदलश्रेणीपूर्णोदरे ऽ तिविरजतु २२ याकोअर्थ य
हश्रीचंद्रावलीजीकेदोऊकांनवियेविचित्रअमोलमणी
केसमूहसोंओरसुवर्णसंजटितजोताटंककहैटेढोम
कारसूसमुदायमाहामाहामणीसुवर्णजटितताटं
ककेतिनकीजोकांतप्रभातिनसूर्यजीत्योहे ओरमद
गजराजजोहस्तीकेकुंभस्थलतेंप्रकटजोसोभायमान
निर्मलबडेबडेगजमोतीताकरिकेमंडितकीये एसे
मोतीजडेप्रायहे ओरताटंककेपरमेंकमलकेमध्य
कीपांषडीकीपंक्तिटेढीकेपोनेभर्योहे ताकरिकेसोभि
यतुहे २३ श्लोक [illegible]पलवौ चंद्रावलीलयेवद्रा
ङ्निर्जितस्य ध[illegible]बाणशरः नोलोचनेसखितदा
हितपुष्पबाणोर्सर्वस्वभवहृतमस्यनतेविलासाः
२४ याकोअर्थ श्रवयहश्रीचंद्रावलीजूकीभ्रकुटीनहे
यतोकहाहे यहभ्रकुटीनहीयतोकहाहे यहभ्रकुटीनहे
यत्रासुबालपणकीचपलताबाललीलाहिकराड्रागिन
कहतेसी घूहीजीतहे कंदर्पकेधनुषहीजीतहे ओरहे
सषीयहलोचनकमलनहोयतोयेकंदर्पकोदोऊपुष्प
बांणछिनायलीयेहे याहितसोंछिनायलीयेहे ओरले
लोचनकेविलासनहोय आसमंतातसर्वस्वहीकंदर्प
कोहरलीयोहे तेविलासनहोय २४ श्लोक स्यातांय
दिराकेशौ तदुपरिचदिवाकरावुदयातं तहितथावे
धांतरद्वयसाम्यंस्यात्सरोजादि २५ याकोअर्थ ओरजो

दं-टी- होय तेदोऊ पूर्णचंद्रमा औरताचंद्रमाऊ सिरदेषदीये
होय तवते भांतिदोऊ गंडस्थलकपोलतेस्यांमहोइहेस
रोजाक्षी २५ श्लोक नवकुंकुमपाटीररेखा गंडद्वयेसते
विराजिरे मृगदृशः प्रगटाः सुखमाइव २६ याकोअर्थ न
इकेसरि औरचंदनमें मिलायघसिकरिकें हेसषीदोऊ
गंडस्थलविषेंकीनीहें दोऊरेखा सोमृगनयनीजोश्रीचं
द्रावलीजू तिनकीदोऊ गंडस्थलविषेंसोभियतुहे सोके
सीजांनेंहेंकोऊ एकमूरतवंत भीतरतेंसोभाप्रकटभ
ईहेमानों २६ श्लोक स्फुरत्तिलकुसुमपदायहसुंदरना
सापुटेकुरंगाक्षी अविदूरलंबिमुक्ताफलमालोलंबमोद
धती २७ याकोअर्थ औरस[illegible]तिलकेपुष्पकेसद
कूंदूरकरतहें एसीजोसुं[illegible]नासापुटनकसोलश्रीचंद्र
वलीजूकेविषें अविदूरकहेतोऔरएकदूरबहोतहदूर
नाहीं थोरीदूरलंबमुक्ता[illegible]सोआलोलचंचलयाहे
रातसोभाकूंधरत २७ श्लोक नासाग्रगानमुदारमुक्ता
फलमालितन्मृगदृशः किंत्वाधिक्यवरोनप्रकटः
सुखमामतस्य २८ याकोअर्थ हेआलीसषीनासिकाके
अग्रभागकूंप्राप्तजोसुंदरतमगजमुक्ताफलश्रीचंद्रा
वलीजूकेतेमुक्ताफलनहायतोकहाहे अत्यंतआधिक्य
ताकेवशकरिकेंप्रगटभयोहे सोभासिंधुकेअमृतकोस्पं
दकहतचोवतअमृतविंदुआयकेंरह्योहोय जेसेंकप
डाअथवाकेशपासभीगेरायेहोय तातेंमेंजलकोविंदु
अग्रभागकेआगेआयकेंनीचेंगिरिवेकोलटकिकेंरह्यो
होय तेसेंश्रीचंद्रावलीजीविषेंजोहे सोभाकीआधिकता
सोसोभाअमृतकोसोभाअमृतकोविंदुनासापुटकेअ
ग्रभागकोंअमृतकरचोवेकोंआयकेंलटक[illegible]
तबिंदु २८ श्लोक जितविंविधरविंवेरां वर[illegible]स्फुरांसत्रगाढ

मलोदर इव तनुतर रेखा विभ्रती रेजे २९
तत्वैसा मुखकमलोदर इव तनुतर रेखा विभ्रती रेजे २९
याको अर्थ श्रीचंद्रावलीजी कैसी हैं जितविवेवाग्मी चंद्राव
लीजी के अधर निपक्षकुं दूरी कीसोभाकूं हरत है एताद्रसी
तिनके अधर बिंब विषे रांवर तिपुजा कंदर्प ताके जोसास्त्र
लीयेदोऊ एकगुण तत्वहे सोहे जैसें पेटमें कीनाई निपट
छोटी छोटी रेखाकूं धरत सोभायमान है श्रीचंद्रावलीजी
जैसें कमलके निर्भ विषें छोटी छोटी रेषा सोभियतु हे जे
सें श्रीचंद्रावलीजी के मुषकमल विषें छोटी छोटी ठाढी रेषा
सोभियतु हे सो रेषा न होइ कंदर्प के सास्त्र के पाठ तत्व है
ताके अक्षर की रेषा हे ३० श्लोक निसर्गरागातिमनोहरस्य
तांबूलरेखा परिरंजितस्य स्मितो विस्फूतरदांशुभूषा
धरस्य सौदर्यमवाकू पर्थं ३० याको अर्थ श्रीचंद्रावली
जी के प्रथम तो सहज ही अनुराग करिके अधर अति अत्य
तं मनोहर मेरे ताको कहा कहे और बचन में नहीं आवत है
वाणी द्वूं अगम हे अपितु कहे हास्य ताकरिके उद्दित कहे
उपजी जो आस्य किरणे बडाई ताकरिके रदंशु कहे दंतन के
तेज किरण करिके भूषित हे और कैसे हे जो तांबूल रेषा क
रिके परिरंजित हे नाम आसपास सगरे हे ३० श्लोक तनु
तरस्तु भगाधरगतरेखा नहि घोषभूषणो गपास्या वाग
मृतजलधिपूरस्त्रोतांस्येवोलसह वर्य ३१ याको अर्थ
श्रीचंद्रावलीजू के अधर विषें तनुतर कहे अत्यंत सूक्ष्म सु
भग कहे बहुत सुंदर अधरगत रेषा हे और घोषभूष
णांगी कहे वह रेषा न होय तो कहा हे वाणीरूप जलधि क
वाणीरूप अमृत समुद्र को जो पूरस्त्रोत के मुषकी नांही ज
त कहे ३१ श्लोक वितर्कयहसहचरीयहसषीये कहत हे
... ... पिछिजालीय पदेत्माद्यदाविस्किरा विभ
लें कं... ... ... मनोविनोद कासिख वरोसा कुरुते नतादि वि

दां·टी· त्रं ३२ याकोअर्थ अचिरांशुकहे थोडेकोनहे अंशु लताक
हे किरण पंक्ति कूं दंत पंक्ति मिसकरिकें जाकी रति स्थिरक
रतहे श्रीव्रजराजजूकेमनकोविनोदकरें श्रीचंद्रावलीजू
अपनेवसकरें तामें विचित्रकहे आश्चर्य नहीहें ३२ श्लो
क अपि प्रियसखि द्विजावलिरियं न किंतु प्रियानुरागरस
रंजितारतिरसामतश्रेणयः ददातितदियंसदारहसिमा
धवायेवृसोप्यमेदमनुरूपतेरतिरसस्य चूडामणिः ३३
याकोअर्थ अपिकहेंकोमलबचनसोंबुलावनो ताकरिकें
प्रियसषीजोश्रीचंद्रावलीजू तिनकीजो द्विजावलीकहे दंत
पंक्ति सोदंतपंक्ति नहोयसोकहाहे प्रियकोजोअनुरागक
हे प्रीतिकोजोरंग ताकरिकेंरंजितकहे रंगीलोरसरसाभृ
तकीश्रेणीयकहे पंक्तिहे सोसदारहसिकहे एकांतके
विषेंमाधवजो लक्ष्मीनाथजूकूं देतहे औरवेरूरतिर
सस्य चूडामणी हूं उत्तोवल सोरंगातहे ३३ श्लोक मुखचं
द्रमयूखावा किंवाहीरकजालजाः दाडिमाबीजपङ्क्ति र्वेत्यन्
द्वीरोरघेद्धृभवत् ३४ याकोअर्थ अथवा दांत नहो यश्रीचं
द्रावलीजूकेमुखचंद्राकीकिरणोहें अथवाकहा हीराकीपं
क्तिहे केअथवादाडिमकेबीजकीपंक्तिहे यहदांतविषेंप्र
द्वीरहोतभयो केकूलि द्वीरनहोतभयो ३४ श्लोक आद्विमा
दधरसुधास्वलोदितिप्राप्तकेसैया विधिना रचितेतदुप
ष्टंभेचिबुकेपाटीरमादधती ३५ याकोअर्थ ओसअधरविषें
सुधाकीआधिक्यताहे तातें गिरिपडेगायह विधाताकूं आसं
का आयकेंप्राप्तिभईहे तबबिधातानें ताकीसहायताकूंदुप
मे ष्टैकहेलथांभलेंकूं सहायचिबुकरच्योहे चिबुकमेंजोकप
वितसुधागिरतोकुंवामेंआवेरस सोचिबुकबिषेंचंदनदी
योहे ३५ श्लोक अस्मिन्मुखेंदे मदलेंदुमधिकारितामात्र
कलकितेति प्रकासयंती चिबुकेजनस्यबिंदुविरेजेदधती

मगाहली ३६ याकोअर्थ याश्रीचंद्रावलीजूकेमुषचंद्रविषेंक
दर्पचंद्रमाओरकमलएतीनोकूंधिकारतामात्रकरकेलेकि
तरिजनिकीसोभाकूंधिकारकरतिहे इतनीयहकलंकता
यहचिवुकविषेंकाजरकोबिंदुकरिकेंश्रीचंद्रावलीजूसोभा
कूंधरतहें ३६ श्लोक कि वर्णयामिसरसस्वचिवुकागतश्यामं
बिंदुसौंदर्यं मन्येरसिकसिरोमणिमाधवमनएवतत्रगतं
३७ याकोअर्थ हेसषीमेंकहावर्णनकरूं जोचिवुकविषेंप्रा
प्तजोस्याम बिंदुकीसोंदर्य तामेंमानतहूंजो स्यामसृंगारर
सकेजोरसिकनकेमाथेकोमणिरूपजोश्रीकृष्णकोमनहीं।
तहांलाग्योहे ३७ श्लोक किमयममलोराकाधीशोनतत्रमधु
व्रताः कमलमथवास्मेरंतत्रात्विरांबुलतानहि किममृतम
यो ऽपूर्वोमेघोनतत्रहिखंजनाविलसतिमुखांभोजंकासा
नसंशयभूरभूत ३८ याकोअर्थ कहायहनिर्मलपूर्णमासी
कोपूर्णचंद्रमाहेनांही सोकाहेतेंजोयहे तहांतोविद्युलता
हे कमलविषेंतोविद्युलतानांही श्रीकेनेत्रभ्रमरहे अथ
वाघूंघरवारेअलककेअग्रहे चंद्रमातोभ्रमरसोंआवृतनां
हीहोतहे कहाअथवाकमलहे स्मेरकहतेनोनांहीहे सो
काहेतेंजो विद्युलतासोभ्रमरलतानांहींहोतहे विद्युल
तासोंभ्रमर अथवापंक्तिपंक्तितोकहा अमृतमयपहिलेऊ
परजोकेल्ह्यावेर नोमनांहीहे सोकाहेतेंजो तहांनिश्चयखं
जनहे वरसालमेंषंजननजातहें रहतनहीं खंजनसोदोऊ
नेत्रहे यहहेसषीमुषकमलजोहे सोकाहूकूंसंशयकोवी
ठिकोणानहोतभयो ३८ श्लोक सुधांशुसारपरिगलवधास्त
दाननंयच्छिदधेतियत्नेः मालिन्यभामातितदंबुजालितन्मं
डलेचिन्हमितिप्रसिद्धं ३९ याकोअर्थ विधाताने चंद्रमाअ
मृतकोमथसार ननवनीतसो ढिलेकरिकें यत्नकरिकें जब
श्रीचंद्रावलीजूकोमुषचंद्रमारतिसमारतभयो तबरहेकम

दो॰टी॰ जदलदीर्घनेत्रीतबचंद्रमांविषें उतनोंसरूपभयो [illegible]
ड्योतोजेतोसुषपड्योतेतीमलीनतायामेंभाषतहे सोचं
द्रमाकेमंडलविषेंचिन्हहे लांछनकलंकयहसाधहे ४८
श्लोक स्वरेणभुवनत्रयंविजितमित्यमितापकेतदुद्ध
वभुविस्मरस्मयहरेस्वकंठवभौ॥ व्रजेशभुजभूषणेस
खिमनोहरेरखात्रयस्वरत्रयामिवस्फुटमलपजांकितवि
भ्रती ४० याकोअर्थ श्रीचंद्रावलीजूनेंसुरकरिकेंइद्र
लोकीकविषेंत्राकरिजीततभई याकोअमितापकजनाव
नकोजोउद्भवउदयहायवेमेंभायविषेंअप्रथिवीविषेंताकेउ
दयहायविषेंकेसोहे जोकोटिकंदर्पकेगर्वकूंहरे एसीजोकं
ठसरीआपुनेंकंठविषेंसोभितभई उहांतीनरषानहाय
कोटिकंदर्पकेगर्वकोंहरे एसीतिसरीकेंठसरीधरीहेमोनों
औरव्रजेशजेश्रीठाकुरजीतेंभुजा[illegible]भूषणरूपहे उहकंठ
श्रीठाकुरजीकेभुजके[illegible]विषेहे सषीनकेमनकोंरुचे
भावे एसीतीनोंरे[illegible]हे सोतीनोंस्वरजोतारमध्य
औरमंदएतीनों[illegible]प्रगटीहे एसीरेषासोमल
यागिरसो[illegible]नहूतोकोंधरलभईहे ४० श्लोक म
णिवरहीरक[illegible]टितंमुक्ताफलावलीव्रातं प्रगटइ
वभावनिचयोभ[illegible]मस्यावभौकंठ ४१ याकोअर्थ मणि
मेंजोअप्रपृथ्वीरत्नमोलमहीरा सोकुंदनविषेंजटित औरगा
जमुक्ताफलकीपंक्तिप्रायेसोजांणेंप्रगटहीभावसोंससमूह
श्रीचंद्रावलीजूकेकंठविषेंभूषणसोभितभयो वभौकहि
तेसोभा ४१ श्लोक उरसिविविधमप्याकल्पभारंवहंतीर
तिरणजयभूमौराधिकावध्वमस्य स्थलमभिसुश्रुभेतिस्थ
लगुंजामणीनामतिरुचिरमुदारंहारमाविभ्रतीसा ४२ या
कोअर्थ श्रीचंद्रावलीजीकेउरस्थलविषेंज[illegible]तिमेंत्ति
केआभूषणकोभारबढतहे सोउरस्थल[illegible]हे जोरतिर

गर्व जीतिकी शोभ्यहे राधिकावल्लभजो श्रीकृष्णसो याउर
स्थ उरतिरणभूमिपरजीत्योहे पूर्णोऽभितोसर्वत्रसो
माकूं देतहे यह बडोजोगुंजामणीनकेप्रतपतसुंदरम
नोहरहारकूं आसमंतात् श्रीचंद्रावलीजू धरतहे ४२
श्लोक मृगमदपत्राकितमुरुकुंकुमपंकेनरूषितंरजो र
तिपतिमंगलकलसद्वयामिवकुचयुग्ममेतस्याः ४३ या
कोअर्थ ओरस्थलकेसोहे कस्तूरीकरिकें मकरिकाप
त्रवलीकरिकेंअंकितहे पत्रजेसेचित्रहोय ओरकेसरि
कीकीचकरिकेंरूषितलगायोहे सोलियतुहे जानेंश्रीचं
द्रावलीजूकेदोऊकुचजुग्महे सोमानुकोटिकंदर्पकेदो
ऊमंगलकलसहे यमानुणकंदर्पकेमंगलकलसहेंसो
काहेतेंजो मंगलकलसकोकुंकुमकरिकेंरंगियतुहे
मीतरश्रोबकेपद्मभरियतुहे तातेंसोहे ४३ श्लोक
कुचद्वयंनैवरसोहावलाकीहातेंखद्विविधंस्मरेण न
चचुकेकिंत्वपरोपरत्नेत्राप्रातुनेत्यार्पितराजमुद्र ४४
याकोअर्थ यहदोऊकुच नहोइतोकहाहे रसकोजो
श्रोघसमूहप्रसिद्धहे चित्तप्रसिद्धकुचकहियतुहे तारसके
श्रोघरूपजोसवकहते चित्रताकूं एकत्रकरिकें कंदर्पक
रिकेंदोऊप्रकारभागकीयेरसहे सोसंयोगविप्रयोगात्मक
दोऊदलात्मकहे सोकंदर्पकरिकेंदोऊभागकीयेहे तोया
परयहचुचकनहोयतोकहाहेजो श्रीकृष्णवितरकएर
सप्राप्तनहोय तातेंयाकरिकेंआरोपणकीनीहे राजकीमो
हरा ४४ श्लोक लावण्यामृतसरसित्रजांगानावपुषिखेल
तःसरव्यः कोकौकुंचौमनोहरोसंश्लिष्टांगावतिस्नेहात् ४५
याकोअर्थ हेसषीयहकुचयुगनहोयतोकहाहे श्रीमतव्र
जांगनाजकेंशरीररूपीजोलावण्यामृतकोसवरोवरहे सोता
वल्यामृत[illegible]रविषेंखेलतहे हेसषीकहायेजोदोऊकु

टी·टी· चरूपजोचक्रवाककैसेहैं मनोरमनकूंरुचेहैंसेहैं सोस्व
तिराय ध्येहकरिके सोदोऊअंगकरिकैंश्रीललितगणदेलहै
तिसोकहितेंजोसघनहैं ४५ श्लोक रतिरसभावद्रुमिवस
र्वेखमनंगभूमुजइवालः कुचयुगलंनिजवसनांचलेन
संगोपयंतीसा ४६ याकोअर्थ हेश्रीलीसखीरतिरसकेदो
ऊभावदोऊदलकेजोसुखायभावताकीनांहीसोहै सोकंदर्प
कोसर्वस्वहै भुजाप्रथवीमूलजोमुक्ताकहाजोकंदर्पहीहै
राजाजहांताकोसर्वस्वहै जोदोऊकुचताकूंश्रीचंद्रावलीजी
दोऊकुचजुगकूंअपनेवस्त्रकेअंचलपदअवकरिकेलुका
वतहैं छुपावतहैं स्यापतहैंश्रीचंद्रावलीजी ४६ श्लोक क्रा
ठिन्येनश्रीफलमतिसरसतयासुधासमूहंच सद्वृतम
सृणताभ्यांजिगायकोकाकचकुच ४७ याकोअर्थ काठि
न्यताकरिकेतोश्रीफलकूंजीतेहैंश्रीठाकुरजीनेहरणकस
यकोकूंनारहिरदयलिदोरसाकीयेहो सोतीवरनषमुग
ताकेअंकुरविषेंकलाये सोसंनषमुरडायगयेहैं ये
कछूकयेनभएहैं सोकठिनताकूंजीतलभए औरअतं
तसरसताऔरसंपुलकरितोअमृतकेसमूहकूंनिश्चय
करिकेंजीतेहैं श्रीगोलवत्रुलकरिके औरमसणताके
हलसाचिक्कणताकहते सचिक्कणताकरिकेंचक्रवाकप
क्षीजीते जिगायकहते जोतेयहदोऊकुचद्वद्वनेचक्रवा
कजीतेहैं ४७ श्लोक सौदर्यसीमकुचकुंभयुगंविधाय वे
धाःकुदृष्टिभवदोषभियांजनस्य विंदुद्वयंयदकरोत्सखि
तेनतत्रस्यामागतेत्पहमयकमलाक्षिमन्ये ४८ याकोअ
र्थ सौदर्यताकीसीमयकेआगेऔरसौदर्यतानहींहैं एसो
विधातानेसौदर्यसीमदोऊकुचकुंभकलसकरिकेंविधाता
नेकाहूकीकुदृष्टितेंउपजे जोदोषतादोषकेभयकरिकेंका
जरअंजनकरिहै सषीकाजरकेजबदोऊविंदुकरतभयो

है ताकरिकें तहांकुचके अग्रभागश्यामभईहे याप्रकार
मेंमानतहूं हे कमलाही मेंयाप्रकारमानतहूं ४८ श्लो
क गोपांगनांगसुखमामलसरसिकुचाब्जयुग्ममतिश्याम
सं मन्येसखिसंजातंयत्कोशोपर्येपिभ्रमरौ ४९ याकोअर्थ
श्रीगोपांगनाजीकेअंगकीसोभाकूंअमलसरोवरविषेकुच
कमलदोकेहें सोअत्यंतरससहितसरसतहें मानतहूं
हेसषीनीकीप्रकासजाल प्रकट भयोहे जोकमलकोसडोडो
ताऊपरहूदोऊभ्रमरहें ४९ श्लोक सुवर्णसितयूथिकाकु
सुमनिर्मितां बिभ्रतीकुरंगमदकुंकुमारुणकणैर्विचित्रां
स्रजां॥ विचित्रवसनांतरेसखिविलक्षणांमाधवप्रियाति
शुभ्रमेकुचोपरिविहारमालन्वती ५० याकोअर्थ पीतसु
वर्णजूथिकासुवर्णकेपुष्पऔरस्वेतजुहीयहआदिदेक
रिताफूलकरिकें निर्मितजोमालाताकोंधरतहें सोफूलक
स्तूरीऔरकेसरीके[illegible]करिकें विचित्रछींटकी
हे मालाकोधरतहें सोहेसषी बिचित्रबस्त्रकेभीतरविषे
यहमालानहोय विलक्षणामाधवप्रीतिकरिकेंअत्यंतसो
भितकुचऊपर विहारकोविस्तारतहे ५० श्लोक सुंदरकुच
हेमांबुजनालइवालंबोरोचतरूरांगपा: नाभीसरोभव:स
खितन्वारोमावलीतस्या: ५१ याकोअर्थ सुंदरकुचसुवर्ण
वस्त्रकमलकेनालकूंअवलंबितकीनांईसोभायमानहे ए
सोजोकसांगीकुंमारश्रीचंद्रावलीजूनाभिसरोवरतेंप्रकट
भएहें जोहेसषी सूक्ष्मरोमकीपंक्ति सोरोमावलीनहोयतो
श्रीचंद्रावलीजूकीनाभिसरोवरतेंकुचहेमकमलप्रगटभ
योहे ताकीनालहे रोमावलीनहोय ५१ श्लोक तनुतरकु
वलयदलमयबाण: कुसुमायुधेनतन्वंगपा: हृदयेर्पितइ
तिसख्योमन्येनारोमपंक्ति: सा: ५२ याकोअर्थ निपटछोटी
छोटीनीलोत्पलनीलकमलकीपांखुरीमयहीहे वाणसोकु

सुमनआयुधकरिकेंतिनकेअंगमेंहृदयविषेंधरपिलहे स
षीमेंयहमाननतहूंलेरोमपंक्तिनहोयश्रीचंद्रावलीजीकी
५२ श्लोक स्वयंधूतोंनाभीविवरकुहरस्कारतिपतिर्मनो
मीनंतस्याहृदिसरसिकौमारचपलं वलीकलेसख्याय
दृतिगुणतारूप्यवरिसंततनोततस्त्रश्रीर्नतुमरागरोमाव
लिरियं ५२ याकोअर्थ कंदर्पआपधधरतेहे श्रीनाभिरू
पीजोविवरगुफाकुहरकहेखाडगडाविनाबहोतहै तावि
षेंरहिकरिकेंकंदर्पसोश्रीचंद्रावलीजकोचंचलमनरूपी
जोमीनमछ सोश्रीचंद्रावलीजूकेहृदयसरोवरमें सोमनके
सोहे जाकोमारचपलहे प्राणकोमनहोयतोकदाचितकछू
स्थिरहूहोय पैकौमारचपल सोवहोतहीचपलहोतहे
एसीचपलमनरूपीमानकूहषीकंदर्पआपुनेवशक
रिवेकूं जवश्रत्यंलतारूपएकरसरीकरिकेंकाढेदेकुंडालत
भयोहे कंदर्पआपुहीश्रीनाभीहोयकरिकेंनाभिविवरवि
षेंछुपिकेंतारूपएकराकेंकूंवरूपीकाढेकुंडाललग
योहे विदिसंकरतेनाकोसोतेसुत्रकीसोभाहे नकस्रचिव
रणारोमावलीहेसह ५३ श्लोक नसारोमावलीकिंतुस्तरीय
हृदयोद्भवा नाभीकेदपतेत्यालिरसधारेवराजते ५४
याकोअर्थ तेहसोरोमावलीनहोयतोकहाहे श्रीचंद्रावली
जूकेहृदयविषेतेप्रगटभयोजोकामएकमहाश्रनिर्वच
नीयरससोरस हसषीच्यालीनालीभीरूपीहृदयविषेंआप
करिकेंपड्यो सोरसकीधाराहीसोभायमानहे ५४ श्लोक
मत्तेभकुंभसुखमामदहारितेवनोकेवलाकिमुतकेसरि
गार्विलसा निर्वासनलमपिवर्ततइत्यतीवमध्येकृसं
साविचकारविधिर्मगाक्षा: ५५ याकोअर्थ मदकरत
जोहस्तीगजराजताकेदोककेवलकुंभस्थलताकीसोभाकेम
दकूंहीहरतहै केवलसोजाहीजानाहीकहलकेसरीसिंघ

जोमत्तहस्तीकोगर्वदूरिकरैहे एतादृशकेसरी सिंघके
गर्वकूं दूरि निर्वासितत्वमपिवर्त्तते गर्वकीवसनांकूं निव
र्त्तदूरिकरतहे याकरिकेकहाकहोहेसखी उनकेदो
उकुचतोहस्तीकेकुंभस्थलकीसोभाकेमदकूंदूरिकर
तहे एकलेहीनांहीदूसरोसिंघजोहस्तीकोगर्वदूरिकर
तहें तासिंघकेगर्वकीवासनाकूं दूरिकरतहे याकरिकें
सखीविधातानेयामगाक्षीकोंमध्यभागअत्यंतबीचसूक्ष्म
करलभयोहे ५५ श्लोक नतन्मध्यंतस्याः किमुतरतिसा
स्त्रस्यनिभृतरहस्यंतद्वेताकमलमुखिभोकाञ्चनपरः घ
स्यं नस्यामादिस्यंप्रथयितुमुदारेणविधिनाकृतारेखास्यां
मासहचरिनरोमावलिरियं यहंश्लोककोअर्थअवकहत
हेंजो यहश्रीचंद्रावलीजूकोमध्यभागनहोयतोकहाहे
यहरतिकांमकीडारतिशास्त्रकोनिरभरगूढरसरह
स्यअनिर्वचनीयहे सखीवाकीसोघनस्यांमजोश्रीक
स्नतिनविलरकोकथ्यरहस्यकोजांननवालोकूनांही
औरभुक्ताकूनांहीहे याकूप्रथमईतुकहतेप्रसिद्धकरिबे
कोहेसहचरीविधातानेउदारताकरिकेंस्यांमरेखाकी
नीहें यहरोमावलीनहोय सोकाहेतेंजो रतिसास्त्रको
निरन्तररहस्य ताकेजांननवारेहें औरजोकाञ्चनस्यां घ
मविलांकोऊनांहीहे सोप्रसिद्धिकरिवेकोंविधातानेस्यां
ममरेखाकीनीहे वलीस्यांमकीएकस्यांमताकरिकेंजां
नियें वेश्यासमस्याकीनीहे रोमावलीनहोय ५६ श्लोक
नसानाभिस्तस्याः किमुतसुखमासीधुसरितस्तनौराको
यंकुवलयदलस्यांसहचरि यलक्ष्येतोस्माकंचतुरतरम
प्यत्रयतिनंनिमज्जत्येवेदंध्यतिगतिविकारादिरहितं ५७
याकोअर्थ तेहेसोश्रीचंद्रावलीजूकीनाभीनहोयतोकहा
हे तिनकेशरीररूपजोसोभाअमृतकीमहानदीतामध्यमें

ब्र.टी. भमरहे यह हेक मलदी घेलोचनीसह नरीसो काहेतेजो
तुमक्योंकरिकें जांगेजो भ्रमरहें जातें हमारो चित्तजोहे
सोजद्यपिअत्यंत चतुरहे तोकूइहां पडोयेदुवेहीयह
चितुहमारो धीर्यंओर चापैल्पओर विवेकआदिहरतभ
योहे ५७ श्लोक विविधमातिजटितकनकप्रसूनलसद्
सितपदगुच्छाभ्या लसतीति पीतदाम्नाश्रम्मेयत्येपि प्रिया
नीव्याः ५८ याको अर्थ भांति भांतिकेमाणिक्यादिमणि
जडेहितसोनेकेजडावफूंद ताकोउद्दीपमानसितकहे सु
तत्रअसितहूहें सोमसोअभंभपाटकेदोऊकुवाके फूंदला
वांधेहें सोददीपमानहें अमंतपीतडोरीकरिनीवीकोचु
णावंधोहे ताकरिकें श्रीप्रीयाजूकी नीवीकोणाग्रअत्यं
तसोभायमानसोभियतुहे याकूजांकूंफुंदा कहतहे
५७ श्लोक अप्रियसरवितं तवस्या नायं परं मदनाप्रिया
सदनजघनोपांतेनेति काभं मलीलोचने विधिरविततः
कोनात्मस्पारसौपे धनस्पत मुरु गुरुतरः सस्वदुत्तोह
रिप्राणायास्लः ५८ याको अर्थ लवकहतहेंजो अयेसा
धीयहप्रियाको नितंब नहोय नितंवसोकटिलेनीवेंपिछ
लेभागको उचपरदेससो गणि ओरजंघनसोंपेडूकेनी
चलेपरदेसनितं बकोअग्रालो भागजघामूलकहतहे
सोऊनको नितंवयहनहोयतो अत:परंकहाहे कंदर्पकी
प्रीयाजोरतिमदनकीस्त्रीताकोघरहें सोजंघननितंवको
ऊदेआकरिजंघनके वर्णनताकेंनिकट अंतविषेअत्यंत
कांतिहेजाकी हेकुरंगविलोचनेसोविधातानेरच्योहे में
डासातनिप्रियाजूकेरसको जोसमूहजोधनहे जाकोजाते
तालेवहेतहीबहोलवडोओरबडोतमनिरंतरगुप्त
कुसुकेअत्यंतप्रीतिकोआस्वद लहतेहिकां
कु विचित्रमणिमयलागतमनोहर

लकोग्रथितघुघुरूघंटिकाः कलस्वनविमोहितत्रिदश
वृंदवंदारिकाः सरोजदललोचने सखिविरेजुरुघत्प्रभाः
॥६॥ याकोअर्थ विचित्रभांतिभांतिकेमणिकीकटिमेषलाता
विषेंप्रोतजोमनकुंरुचेग्यजमुक्ताफलताकुंन्यारेन्यारेएक
एकपरकालेकेवीचवीचकीयाहे जालककोहे जालीविषें
ग्रथितहेघूंघरूश्रोरछोटछोटेघटाकीकणीछुद्रघं
टिकाताकेअव्यक्तमधुरनादकरिके विशेषकरिमोहे
हेंदेवतानकेजूथ गंधर्वनकेजूथतेजोकमलदलदी
र्घलोचनीहे हेसषीसोभाग्यमानप्रगटभईहेप्रभाजाकी
एतादृशीहे ॥६॥ श्लोक सुरत्नानिधानिहरिकंठभूषणावि
धिनामनोरथशतेननिर्मितौ असितेतरयेसुभगकांच
कंकणौ शुशुभतेविधाज्ञयुगलमदृशा ॥७॥ याकोअर्थ
श्रोरकैसीहे सोभाकीनिधिकीषानिहें श्रोरश्रीठाकुरजीके
कंठकेभूषणहे सोविधाताने सैकरवा मनोरथकरिक
रिकेंसमारेहें श्रोरवेसुवर्णकांचकेसुंदरकंकणसो
भियतुहे दोउलषनगायनीके ॥८॥ श्लोक ततःकन
ककंकणावसितपद्युग्मांचितैस्ततस्त्वनवमुक्तिविरचि
तौमुदाविभाती मनोज्ञकरयोः प्रियेसुमुखिराधिकाव
ल्लभप्रियातिशुशुभेतयोर्विधेदेतीसमादोलनं ॥९॥ याको
अर्थ तदनंतरस्यामकाचकेसुंदरकंकणसोभियसापाछें
सोवर्णकेसोपाटमेंप्रोयेजोडेसुवर्णकेफूलभांतिसोका
ते श्रोरतदनंतरनयेमोतीनकरिकेंरचेरचनांकीयेहें ऋ
दयसंयुक्तधरतहें मनकूंरुचेएसेदोउहाथविषेंधरत
भई हेप्रियेसुमुषीराधिकाश्रीवल्लभजेंश्रीकृष्णतिनकी
[illegible]प्रियेसोअत्यंतसोभितहे एसेकंकणकूंधरतसमयकूवाहे
[illegible]डुल चरणकी सोतापाछेंसुवर्णकेकंकणताके
[illegible]जोरवा पाटके फुंदनासोभिततदनंतरनये

दं·टी· मोतीकेरचे अग्रागें मोतीके गजरासो हरषसंयुक्त मनकूं योग्य
हें ऐसे दोऊ हाथ विषें धरत भई हे प्रियेश्रुमुषी सोश्रीरा
धिका वध्व भजो श्रीकृष्ण तिनहीकी प्रिया श्रेष्ठ त्पंत सोभाय
मानहें तिनकूं धरत हाथ जोडावलहे अयें चित्रकी सो अस
भमहरंन्ना कुञ्जमुखिहे कमलमुषी ऐसी श्रेयें यह संबो
धन जो यह कौनको चित्त जो प्रसंन्न कहते स्वेच करीनहे
तदनंतर हेद सो अंगुली विषें विचित्र माणि करनिर्मित सो
नषके किरण करिकें भूषित सोभित भई प्रियवध्व भा
श्री ठाकुरजीकी प्राण प्रियकी मुद्रिका सो नषके किरनक
रिकें भूषित सोभित भईहे ६२ श्लोक ततः पश्चाच्चामीक
रस्य घटितौ चारु वध्वयौ ततः सा गौरांगी मरकतमया चं
गदवरौ स्वबाहु रम्यन्ना [illegible] न्नृपासा दिवदद्धत्पयें
तः कासांप्रसंन महरन्नं पुसमुषि ६२ याको अर्थ तदनं
तर कंकणके पाछें पुवाली सुंदर घडित दोऊ हाथकी सुं
दर चुडी तदनंतर ते गौरंग मर्कत मणिमय श्रेष्ठ अं
गधें दवाहु [illegible] घ [illegible] जाव दश्या पुनें दोऊ वांह विषें धरत भ
ईहें सो यह [illegible] न होय यह अंतःकरणके ओरने
त्रकूं पास फांसी परीहे हे सषी आपुनका हूके चित्त प्रसन्न
महरन्ना कहले षेवकरन रहें कमलमुषी ६३ श्लोक विवि
ध महामणिजटिताः कनकमया मुद्रिकास्तदंगुलीषु
दसास्तु नखोद्दितदीधितिभूषा सुविस्फुरेताह्नि ६४ या
को अर्थ भांतिभांतिके महामणिजटित सुवर्णकी कीनी हें मु
द्रिका तिनकी ते अंगुलीन विषें दसों अंगुलीन विषें ओरन
षतें उदित कहे प्रगट भई जो दीधिति कहते किरण सो
ति तान षके किरण नहीं भए हें आभूषन उहे मुद्रिका [illegible]
ता करिकें सोभियतु हें एणाक्षी मग न [illegible]
श्लोक नेमौ वाहुवलवि सलते प्रेमपि [illegible]

मृदु करतलेकिंतुपंकेरुहेले नाप्यंगुल्य: सखिपराभिमा:
श्रेष्यस्तद्लानां नेमेचं चन्नखरमणाय: किंतुतेषांप्रभेव
६५ याकोअर्थ यहश्रीचंद्रावलीजूकीवाकूनहोय तवकह
तहे तेहरषकरिकेंकहततहे यहविशालताहे विसलताक
हे कहाजोकमलकेनीलबीच कोमलनतुलतहे सोप्रेमा
रूपीजोअमलताकरिकेंपूर्णहे अथवानाही तिनकोकाम
लहथेलीनहोयतो कहाहे कमलदलहे अंगुलीकूनांहीहे
हेसषीतोअत:परं कहाहे तेकमलकेदल पांषडीयानकी
पंक्तिहे ओरनहीनषऊपरमणिहें ताकीसोभानहोइतो
कहाहे तेकमलकेदलकी प्रभाकांत्यहे ६५ श्लोक नोपांणि
रेषकुसुमायुद्धवाणराजपंकेरुहं ननखरामणाकांति
भाज: किंतुश्रियालिरतिपुरुषिपोड्शायकामार्पिता:सुमु
खिसालसिलीमुखाग्ना: ६६ याकोअर्थ यहहेसोउनकेहाथ
नहोय यहहेसोकुसुमायुधकामकंदर्पवाणराजत
हे वाणमेतेंश्रेषहेजोकमलपुष्प ओरयहनषकेमणि
कीकांतिकीसोभाहोयतोकहाहे प्यारीसषीरतिपुरुषजीत
वेकोहेसुमुषीसषीतीक्षणहेसिलीमुषअग्रभागकूंकंद
र्पनेआगेंवाणकेआगेंतीक्षणायकोंमअर्पातकीयोहे ६६ श्लो
क मंथरागतिरियंचरणानांवारणस्यकथमप्रकरस्था
दूपतेतिप्रभगोतिप्रभगोतिनकोसासंशय: सखिवभूवतद
रौ ६७ याकोअर्थ मंथराहलुवेंगतिजोयहचरणकीसोहस्ती
कीसूंडइनकेसेंसुंडस्थानीअत्यंतसुंदरहे सोदेषियतुहे
याकरिकेंहेसषीकाहूकोंतिन
याकरिकेंहेसषीदेषियतुहे याकरिकेंहेसषीकाहूकोंतिन
कंउरजोजंघाहतामेंसंशयनहोतभयोहे ६७ श्लोक कदली
कंदलिनिर्मितहिंदोलास्तंभयुगलमेवैतत कुसुमायुधस्य
... यंसरव्य: ६८ याकोअर्थ केलकीडांडीके
... केंऊपरतेंकदलीकेनिर्मेकीडांडीताकीनि

टी॰ रमितसमारे हिंदोलाके दोऊ स्थंभ ह्वेहे तेनिश्चय हेहे
सखी यह हे सो भेउनकों कंदर्पकी महीमें मानत ह्रू येदो
ऊ नहोयजंघा नहोइ ६८ श्लोक तस्याःसानंदगोविंदमो
नसायामगीदृशः मन्येरतिगृहस्तंभ द्वयंजानुद्वयंनत
त् ६८ याकोअर्थ ताकुंआनंदसहितजोगोविंदश्रीकृष्णता
केश्रीकृष्णकोमनकेआनंदकेनिमितहेमृगनयनीमांनत
ह्रू जोरतिकंदर्पकीस्त्रीतारतिकेमंदिरकेएदोऊस्थंभहे
ह्रू तेदोऊजांनेनहोय जातेथालसो
मदनसदनकेदोऊस्थंभहे तेदोऊजांनेनहोय जातेथालसो
घुटनकेनीचेंताकुंकहीयतुहे ६९ श्लोक विविधघनेपुर
झिंझिनमोहितत्रिदशनाथवधूवरमानसं स्फुरदलक्त
करंजितमंगुलीघूपिस्रुभेप्सुस्मुसेचरणाद्वयं ६९ याकोअर्थ
भांतिभांतिघूंघरूकेनादकरिके मोहे त्रिदशनाथवधूजो
इंद्रवधूजोइंद्राणीमेंपरमणीकेअंतःकरणाओरम
हावरकरिकेंरंगेहेदोऊचरणारविंदओरवीसोंअंगुली
ह्रू सोदेदीपमानमहावरसोंअंगुलीओरसुंदरचर
णारविंदरंगेहे ताकोविषेअंगुलीओरदोऊचरणारविंदश्री
स्पतसोभियतुहे ७० श्लोक स्मितलसल्लीलवलज्जितरति
पतिकुलचरणासरसिजप्रणतोः प्रतिबिंबितास्तदीया
श्चंदनविंद्वालयोननखः ७१ याकोअर्थ श्रीव्रजललीकेमं
दहास्यकोजा लेशमात्रताकरिकें अथवामंदहास्यकीलेश
सोभाकरिकेंलज्जाकुंप्राप्तभयो लज्जाहेसोकंदर्पसोलज्जा
यकरिकें श्रीचंद्रावलीजूकेचरणकमलकूंदंडोतकीयोहे
तवहेसोकंदर्पकेलिलाटकूंजोचंदनकोचांदलोविंदुकीसो
ताकेप्रतिबिंबचंदनबंदकीपंक्तिकेप्रतिबिंबहे,नषनहे
य ७१ श्लोक तस्याःकृष्णेंदुसंगंहरिभजनदशाभाविनेभा
वयित्वातद्योगपत्वार्थमेताक्छिरिशिरसरमयेकुर्वतापादयुगम

सारे तांभोरुहाणां सुचतुरविधिना चारुनिर्मायसख्यस्त
स्याग्रेष्वाहिताये शितकिरणचयास्ते नखाख्यां भजंते ७२
याकोअर्थ अब विधाताने श्रीचंद्रावलीजू कूं समारत श्री चं
द्रावलीजू को श्रीकृष्णचंद्र के संग हरि भजन दशा विषे मा
वीहोननहार हे याकी भावना करिके तो श्रीठाकुरजी के जोगपद
सोअर्थ यह तेसीतलतम अत्यंत सीतल लतममय दोऊ चर
णजुगलकी येहे अंभोरुहजो कमल ता मकरंदको सारस्य
तरको अत्र रलेकरिके अतिशय चतुर विधाता तिन सुंदर
चरणारविंद समारि करी हे हसखी ताके आगे ते चरणारविंद
के आगे अग्र विषे अहिता कहते जे छिनायलाये जे पत फिर
ताके समूह ताकूं लोक नख एसो नाम कहत हे ७२ श्लोक च
रणांगुल्याभरणान्यतिरुरुचुरमंदकांतिकांतानि विषमा
नंगभुजंगमफणामणयइवोत्तमाश्रयोदीप्ताः ७३ याकोअर्थ
श्रीचरणारविंद की सो अंगुली ताके आभरण अत्यंत सो
भित भए हें वहोत बहोत कांति हे जाकी तो ते कांति केसी हे विष
मजो अनंग कामदेव जो भुजंगम के सर्प की मणि के मणिय
केनांई जोणें सर्प के फण की मणि ही हे मानो मृगके बच्चा
के जेसे नेत्र हे का जाके दीक्षा वा दा: स्वाहरणे वच्चा के जे
सी शोभि है जांकी ७३ श्लोक तादृशाश्चित्रो चलजुषि तिरसे
विचित्रासने सरोजादीपादधिकलसंतडुपायनमिव दध
तीसाधिकं शुशुभः ७४ याकोअर्थ एतादृशाविचित्रअंचल
जोपद्यवजो मांथे पर सेवित हे मांथे पर जाव विलास करि
के ओढ्यो है हे कमलनयनी में और मांथे पर विचित्र ओढणी
को आसन हे ताऊपर दही को छोटो सुवर्ण को कलस धरिके
लसताकूं जेसें श्रीठाकुरजी कूं भेट की नांई मांथे पर धरत भई
हें ताकरिके ते अधिक सोभत भई हे ७४ श्लोक अलोलग्रीवं
सादधिकूलसिकामूर्द्धि सुभगा वहंती तारूप्यप्रभवमदत

दां-टी· स्तुल्लावदिमान् सुरेंद्रब्रलादीनपि विगणय्यंत्यालिसहस
स्मितसस्मेरब्रीडातरलितहग्गाकान्तमुमुहे ७५ याकोअर्थ
[illegible]चंचलजोग्रीवाताऊपरजोदधिकलसछोटोसुंदरजोलाग
है जाकोएतादृग्री आपनेमाथेऊपर वहतहे तारूपजोभ
नताकेप्रभावकोजोमदताकरिकेतुच्छकीनाईनोकुहे आ
लिं देवताकूंऔर इंद्रकूंऔर ब्रह्मादिककूं इनसबगणनातु
छ करिकेंगणतहे औरसहजमंदहास्यऔरगर्वऔरल
ज्जाकरिकें चंचलजोहै नेत्रताकरिकेकोजाहैंजोमोहकोप्राप्त
नहोय ७५ श्लोक सखीसतरलाचलझलयकिंकिणीनूपुरा
घमंदकलसिंजितांचिलमनोगंगत्यावने वयस्यसहितो
व्रजाधिपसुतोव्रजंतीपुराददर्शसखिसुंदरीमनतिहर
तस्तामनाक् ७६ याको अर्थ श्रीचंद्रावलीजू [illegible]स
ख्यासखीसंबोधित[illegible]केसेहे जोचंचलहोतहे चूडी न
कंकणकिंकिणी [illegible]घूंघरूताकरिकें वहोत
ही अव्यक्त मधुर [illegible] जानेमनोगपजोचाल्यगत्यता
कीपज्ञा[illegible]है याप्रकारकरिकें बनविषेंचलेहे तबहे
सोसखा[illegible]सहित श्रीव्रजराजजीकेसुतपुत्रग्रह सुंदरीन
कोंजातदेखी [illegible]कहतहैं सखी इननअतिदूरथोडेएकदू
रतेंतिनकों श्रीठाकुरजी ईषत्बाष्टिकरिकेंनकहीदेखीहे ७६
६ छ श्लोक चकितनयनंदृष्ट्वातदाननपंकजेनसमसकदाद
तुंदृष्टिंमनागपिमाधवः निजसहचरासंकालज्जावधान
मपिव्रजप्रियसखितदानाभूत्तस्यप्रियाहतत्वतत्राः ७७
याकोअर्थ श्रीचंद्रावलीजूकेमुखकमलसचकितदृष्टिकरि
केंदेखतदेखतनेत्रकूंकछूथोडोसोफेरलावनेकोग्लानीप्र
कारसहितनांहीहैं श्रीठाकुरजीदृष्टिकोंआपुनेंपासफेरि
लायनांहीसकतहैं आपनीसहचरीजोसखीताके[illegible]को
भयलज्जाऔरसावधानताकें [illegible] व्रजप्रिय[illegible]

मई श्रीठाकुरजीकोंचेतअंतःकरणचित्तसवश्रीप्रियाजूनें
हरलीनोंहे ७७ श्लोक चंद्रावलीसहासोक्तिगलत्परिमे
लानिलः तत्संगामइवांगेषुसंगतः पुलकंदधात् ७८ या
कोअर्थ तबश्रीचंद्रावलीजूनेंहासिकरिकेंकह्योहे हासस
हितहासउक्तिकही तातेंमुषकमलतेंचावतहे सुगंध
परिमलवायुहे तबश्रीठाकुरजीआपुनेंअंगविषेतिनके
संगामकीनांइहें जेसेंआपुनेंअंगसंगभयोहोइ जोताभां
तिसूंपुलककूंधरतभएहे रोमांचितभए सात्विकभायुर
भावभयोहे ७८ श्लोक कथमस्यामनुसंगोभवेत्कथंवा
त्रसहत्वरात्ततः इतिचिंतयन्नुपायंत्तालाहरिराहगोपा
न लां ७९ याकोअर्थ क्योंकरिकेंनिश्चयकरिकें यासूंसंगम
होय अथवाक्योंकरिकेंइहांसखानजानेतेसें याप्रकार
एसोविचारकरिकें तापाछेंउपायसोएककरिकेंश्रीठाकुजी
गोपालकोंकहतभएहे ७९ श्लोक गच्छागोरसविक्रयार्थ
मखिलागच्छत्यदत्वापि [illegible]तदिहानयध्वमचिरा
त्मत्सन्निधौगोपिकां मज्ञानुस्वत्रातोक्तिभिःपरमिमांवाचां
इतिस्वामिनाश्रीमत्सिषतिचलेतिवचनास्तेत्रागमन्स
त्वरं ८० याकोअर्थ सबश्रीगोपिकाजगोरसवेचिवेकेंअ
थेकोंजातहे दांनविनोंदीयेंजातहें ताकोदांनलेंनोंउचित २३
हे ताको इहांलावो आनयध्वंकहतें वेगिइहांलावोमेर
संनिधांननिकट गोपिकाकोंवेगिलावो येकदापिउनको
स्पर्समतिकरीयो मेरीउक्तकरिकेंवचनकरिलावो ये
यहबचनकरिकें जोयहहमारेस्वांमीनेंकह्योहेजो रहे
रहोयहवचनकरिकें इतनेंतेवालकगोपीपासवेगिश्या
ए८ श्लोक तत्रकाचिदुवाचैनान्किमरेगोपदारकाः
[illegible]कारय[illegible]नंदनंदनोगोकुलाधिपः ८१ याकोअर्थ तहं
[illegible]नातेगोप बालकप्रत्येवोलीजोकाहारेगोप

दां-टी- दारका अ्रनाद्‌रकरिकेतुं मबुलावतहो तुंमश्रीनंदरायजू
केश्रीगोकुलकेअधिपतिकेबेटाकाहेकोंबुलावतहो ८१
श्लोक कथमेवंवयंकिंवादस्यस्तस्यकुलांगनाः यातप्रति
ष्ठयास्माकंनतवेयंविभीषका ८२ याकोअर्थ क्योंकरिके
प्रकारहमकोंलांगनाकहोनंदरायकुंमारकीलोंडीहे जा
कीप्रतिष्ठासोहमकोंतुंराजोयहविभीषिनकहतेंजोडर
पावतहो सोहमतुम्हारेडरपायेडरपनवारीनहोंइ ८
श्लोक नवयंखलएवकिंचिदुच्चैः कुलयोषित्सुससाहसंव
दामः व्रजनाथवचः परंविधेयंत्वधिताः किन्नुगच्छतस
गेहं ८३ याकोअर्थ बालककहतहेंजो नकछूहमआपु
हीतेंकछूऊंचेकरि कुलवधूनिसेंसाहससाथकहें येब्र
ऊनायकोबचनकोयाकोपिकोजकहतहे कहामूषेभय
हो निश्चयकरतुनेंराजाको ८३ श्लोक मायात्नंदराय
धोव्रजनाथासंबंधिनामेवनस्य वृंदास्त्रीतद्विपिनंकुलस
दीयपरं नः माता ८४ याकोअर्थ अबगोपबालककहते
जोतुंमकोश्रीनंदरायजीकीसोहहें जोतुमब्रजनाथजोश्री
ठाकुरजीतिनकीआज्ञाविनातिनकेबनविषेमतिआवो
एसेवोर्ईअबतुलराईभमतकेबचनयहजोवृंदास्त्रीति
नकोवचैंनहे तुंम्हारोबचैनकहांतेंआयो यहबनतोह
मारोहे सोकाहतेंजो उहांकुस्त्रीहें ओरहमहूस्त्रीहे ता
तेंहमारोहे ८४ श्लोक वक्रिमेवभवद्वाचिदृश्यतेनचले
किकं वक्रिमाकिलशब्दस्यधर्मस्तस्यदृगाग्रहः ८५ याको
अर्थ अबफेरबालककहतहे तुंम्हारेबचनहेंसोटेढे कु
टिलहीदेषियतहे पेनिश्चयअलौकिकदेषियतहे एसे
हमकबहूंदेखेनहीं उलराईमतकेबचन कु[illegible]
श्चयकहीवचनसब्दमेंहोतहे कुटिलता[illegible]
नकेनेत्रनमेंग्रहणकरिके[illegible]सुं[illegible] श्लोकः न्यायो

पिरहितः किंतु भवत्या तिविदग्धया किम् श्लोके पाठयितुं
मधुनात्वं समागतः ८६ याको अर्थ अब पूर्वोक्त बालकके
बचन तुमकों यह कहतहे जो कुटिलताको हासन्द में गहर
करीये तो कहा तुं मन्याय सास्त्र रूप ग्रंथ है के कहा तुं मध्य
स्तंतचतुराई करिकहतहो उत्तर भक्तन के बचन कहा अ
न्याय पढ़ावन कों तुं मध्यवन्ना येहो ८६ श्लोक ताबक्लिं
बमसहिशुरमंदमंचलकां चीकलापकलसिंजितमंजुगत्या
गोवर्द्धनाद्रि शिरसश्च पलातरीयश्चंद्रावली निकटमाग
मर्द बुजाद्दः ८७ याको अर्थ यह सब बचन गोपबालकक
हे भक्त उत्तर दे तहांतो ई विलंब श्री ठाकुरजी तैसहा नग
यो वऊतजोहोय तैसें अचतकरके कहा कोंचीजो कटिमेप
ला कुद्रघंटिका को सब्दकरिके जो अयक्रम मधुर सब्दकर
त सुंदर गति चालक रिके श्री गोवर्द्धनपरवत के सिष
रते वेगि दे दौरत उतरे सो और बातके सिषर ऊपर दौरत
उतरे चपल चंचल होत सो उतारी यउ परणां बस्त्र याप्र
कार श्री चंद्रावलीजु कों निकट ८७ अंबुजाक्ष श्रीकृष्ण सो आव
त भए हे ८८ श्लोक मनो वचो गोचर लोचनां तसौंदर्य लेशं
सुविचित्र वेषं स्मित श्रियानंगविमोहनं सा ददर्श गोपे
द्रकुमार माराल ८८ याको अर्थ मन और बचन तो गोचर
जाको मन और बचन जो न वे कहिबेको सामर्थ्य नांही क
हा जो एक ले नेत्र अंचर प्रांत भाग के अंत एक कोणे कीसो द
यंता को एक लेश मात्र हू मन कों और बचन कों गोचर हे जा
नत हू नांही और सुंदर विचित्र रूप चित्र है वेश जाको जाको श्री
मंद हास की जो कोउ एक सोभा ताको बेखरिको टिकंदर्पहू
[illegible] रिके मोहकों प्राप्त होइ ऐसो श्री ठाकुरजी कों
[illegible] जराजजके कुमार को आपु ने निकट हों दे
ष [illegible] श्लोक बदन सुधानिधि सुखमाज लानिधिम

दं·टी· ग्नां दृशां कुरंगाक्षी जाग्रत्कद्धनुर्यत्सैव सहस्रा[illegible]प्पासी
त् ८९ याकोअर्थ [illegible] ठाकुरजीको मुषके सोइ सुधानिधि
चंद्रमा है और [illegible] तो समुद्र है ता विषे कुरंगाक्षी श्रीचं
द्रावलीजु के नेत्र [illegible] वत भई निकासिवेको सामर्थ्य नां
ही है निकासि सकत नांही है जातें दृष्टिकी साय्यए आए नम
न है डूबो है ८९ श्लोक अपांगविभ्रमोत्तुंगतरंगैस्तन्मनो
दृशो अगाधे पातिते वास्तामज्जाके व हिलागतौ ९० याकोअ
र्थ श्रीठाकुरजीके कटाक्षको जो विलास ता कटाक्षविलासको
जो उत्तंग ऊंचे को उछलिवो ताके जो अनेक असंख्यात तरं
ग लहरी ता करिकें तन और मन और दोऊ दृष्टि ए तीनों अ
वगाध कहते निश्चय ऊंडे गहरे जल तरंगमें जायकें
पडे हैं अब बाहर आयबेको असक्त है ९० श्लोक धम्मि
ल्लं बादाधिकलश्रीकां मु[illegible]स्या[illegible]वातं मार्गवागम
नमयवाकंचुकी मंचलं[illegible] देहो वा[illegible]गरह मुत्तरसदी वृंदम
धास्य गाक्षी घोषाधि[illegible] मकि[illegible]दाना विदन्तो हितेव
९१ याकोअर्थ [illegible] वा समें मोको वेणीकी सुधनां
ही है और [illegible]कसकी सुधि नांही है केन हो है अथवा मे
रे माथेकी सुधि नांही है माथे ऊपर दधिकलसको स्थाप
न है के नांही है [illegible] सुधि नांही है अथवा मार्ग पेंडे हू की
सुधि नांही है अथवा कंचुकीकी अथवा अंचल माथे ऊपर
को घूंघट पछेवकी हू सुधि नांही है अथवा आपनी देहकी
अथवा घरकी अथवा सषीनके जूथकी जो उहां कहा है के
नांही है यह एजो मृगाक्षी श्रीचंद्रावलीजू ताकों कहां लों क
हूं तो घोषाधीस आत्मज जो श्रीठाकुरजी ताहूको तासम
य नजांनत भए है मोही हो गई है ९१ श्लोक तत्तोनुकूलेरिय
तल रंगैरपांगपातैर्वितितैरिवास्त्र जालैर्विशालैर्यच नैस न
स्याः स्वसंविदं सरव्यकरोदुदारः ९२ याकोअर्थ [illegible] तन

श्री ठाकुरजी के अनुकूल कीनों है ताके अपांग के विलास के
उं चेतरंग अनुकूल तरंग करिके और अनुकूल कटा
क्ष के प्रांत करिके विसतार कीनों है अनुकूल कटाक्ष
के प्रांत करिके विस्तार करिके और विसालता करिके वच
प्रांत की जाल विसालता वचन करिके च चन आदि करिके
न करिके विसालता वचन करिके वचन आदि करिके
श्री चंद्रावलीजू को हृदय श्री श्री ठाकुरजी ने आपुनों उर
स्थान करत भए हे तापाछे श्री ठाकुरजी जाणे ९२ श्लोक
अस्यास्सदा प्रेषणमेय दासी च्चातुर्य धैर्यादिक मत्र युक्ति
नैवास्ति गोविंद पद प्रतापानु भावमात्रेण विनेति मन्ये ९३
याको अर्थ तब श्री चंद्रावलीजू के प्राण प्रेम तम जो श्री ठा
कुरजी विषे जो कछू होत भयो सो कहत हे चातुर्य धैर्य
विवेक आदि कथा जेसो इहां होत नाहि विना श्री ठा
कुर के चरण के प्रताप के अनुभाव मात्र करिके विना नहो
य यह मेंमानत हूं नाहि श्री ठाकुरजी को टिकंदर्प
धिक्य अब तप सो दर्प करिके काहू को नाहि चातुर्य
धैर्यादिक रह नहि सकत प्रांण रहे यह जो लिखि चातुर्य
धैर्यादिक होत भयो है सो ठाकुरजी के चरण के प्रताप
के अनुभाव मात्र करिके होत भयो है ९३ श्लोक स्मेरान
ने नतरलांच लोचनेन स्निग्धेक्षणेन दरहास रूचास्व
गत्या किंवा ललितेन वक्त्र नासखियत्नाले स्वे संभाषितां रसि
कतां निधि राधिका नाथ ९४ याको अर्थ श्री ठाकुरजी जो हे सो
गर्व युक्त आनन करिके और चंचल नेत्र के अंचल करिके
और स्नेह संयुक्त सचिक्कणई देखिवो करिके दर हास
करत हे सुंदर प्रकट हास सुंदर हे अपनी चाल करिके प
… हे सखी ताकरिके मंद अब बहोत ही वर्णन कहालों क
… श्री अपनी आप सत्कारासौंदर्य मोहिता करिके सम्प
क… … हित कीयहे श्री ठाकुरजी आपके सहे जोरसि

दा·टी· कृताकीनिधिवांताहै तासोजो ब्रजनाथश्रीकृष्ण सोकह
तहैं ९४ श्लोक प्रबोधिते व गोविंदवचनैः सापि सुंदरी
अत्युत्कटं दोसाश्च प्रत्युत्तरमनुत्तरं ९५ याकोअर्थ
स्तु जोश्रीगोविंदजोश्रीकृष्ण तिनके बचनकरिकेंप्रबोधतही
कीनीहे भरछातेजगायते सुंदरीहू अत्यंत उद्भटहे यहे
तेसें देतभईहें हेसषी कहादेतभईहे सोश्रीठाकुरजीके उ
तरके प्रतिउत्तर देतभईहे जोअनुत्तरख्यागेंश्रीठाकुर
जीनिरुत्तर भएहें सोकहूउत्तरनआयो ९५ श्लोक क
थंगच्छसि पदत्वैवदानं गोरसविक्रये ग्रंजलकोचीकलापैं
नदर्शयंतीसवेभवं ९६ याकोअर्थ अवश्रीठाकुरजीआ
पकहतहेंजो तुंमगोरसविक्रयकोदानविनादीयेंकोंजा
तहो कहाकटिमेंपलाश्रादिआभूषणताकोसबकुकरिकेंक
हाहमकोंआपनीवैभवदिखावतहो ९६ श्लोक इयद
वधिते मदीयागति[illegible]विलोकिता सुभग यत्पेल्य
मितिवदंतीप[illegible]चलत् ९७ याकोअ
र्थ हेप्रभु[illegible]हमअवधिलोंतोकहते तुम
दारग[illegible]कहा नांही देषी अथवा अवदेखोजाप्र
कारकहत[illegible]तेपद मंडगर्वसंयुक्त चलत भईहें ९८
श्लोक नसम्यग्[illegible]वलोकिता गतिरियं त्वदीयामयामनाद्ध
करमागतानिजगतिंपुनर्दर्शय अहोकुलवधूजननि
कटमाक्रयान्निर्भयोभवान्जगतिलंपतेविपिनगोच
रोत्युद्भटः ९८ याकोअर्थ अवश्रीठाकुरजी कहतहें जोय
हतुंम्हारीचालहमनीकीप्रकारनांहीदेषी थोरेसेहलवें
हमारेनिकटआयकेंआपनीचालिफेरिदिषावो अहोय
हबडोआश्चर्यहे अहोकुलवधू जिनकोंतुम निर्भय होय
करिकेंनिकटबुलावतहो भईयाजगतमेंयेवडोनिर्भय
देषियतहे विपिनगोचरोत्युद्भटः कहतबनविषेंप्रकट

यहउपद्रव. ९८ श्लोक अतःपरंकुतोभीतित्वंचेत्सेत्स्वेहायवा
तोमम खसहायोकरोत्येषमामेवालोविपर्ययः ९८ याकोअ
र्थ श्रीठाकुरजीकहतहेंजो तायाकेंअवहमारोकाहेकोडर
तुंमहीहमारेसहायहो तुंमकरिकेंमेंसहायवंतहों ताकेंश्र
वहमकोकोनकोभे श्रीचंद्रावलीजकहतहेंजो येजोहेंसो
हमकूंहीआपनेंसहायकरतहे यहतोबडोईआश्चर्यहे
यहतोविपरीतभयोहे ९९ श्लोक गाकुलसख्यागोकुलमें
तद्धृतंवदंतुनंदागेहे तद्धर्मेराज्यमार्गेनश्रुतिविषयेंगना
धर्मः १०० याकोअर्थ अबश्रीचंद्रावलीजकहतहें जोहेसखी
हे श्रीगोकुलजामें आगेंसबश्रीठाकुरजीकेएताद्रशाव
तांतसबश्रीनंदरायजीकेंआगेंकहेजो तुंम्हारे धर्मराज्य
मार्गविषेंकबहूंहमारेश्रवणविषयनांहीभयोहे कबहूं
हमनांहीसुन्यों जोश्रृंगनारीविषेंकोएताद्रशइतनीढी
ठाईकरे अथवाश्रुतिविषयकहते वेदमेंकहूंएसोनां
हीसुन्योंजोकुलांगनामहाविषेंएताद्रशाको ऊढीठाईक
रे १०० श्लोक [illegible] हेरंगतुंदरोसिचातुर्ये
अहमासंधंगोपीगतमपिगंतुंनदास्यामि १०१ याकोअर्थ
तहांश्रीठाकुरजीआपकहतहें जो तुंमकहायहमिसकरि
केंआपनेंघरजायवेकोंचतुराईकरिकेंकहतहे जोहेसो
हेगोपीहोसंध्यापर्यंततुंमकोंमेंआपनेंघरनजांनदेंगो
१०१ श्लोक भवान्पुरुषभूषणःकथमुगोपिकाखंवदत्यहो
तदपिसावधिश्रवणमंगलंस्यात्मनि नऊत्वमपितेकथं
व्रजकुमारलोकोत्तरा विभातिनवचातुरी विजितवाद्विजा
त्युत्तरा १०२ याकोअर्थ तुंमहोजोपुरुषमेंभूषणरूपहो ह
मजोहेंसोगोपिकाहें तुंमकोंक्योंकरिकेंकहूं कहिसकें श्र
वहेंताहूमेंअवधिपर्यंतजो तुंमकोंक्योंकरिकेंसुनतहें
कांनकूंमंगलरूपहोयहे औरतुंम्हारेआत्मामनविषे

टी॰ टी॰ मंगलहोयहे एतादृशाहमगोपिकातुमकेंऐसोकहतेंक
हें १०२ श्लोक विश्वासमुत्पादयितुं स्त्रियोस्मानुक्तात्वावद
त्येवमयं मगादि विनेवम कृष्णमये विशिष्टः श्वासोभव
त्याभवतिश्रमेण १०२ याकोअर्थ ब्रजभक्तकहतहें जोम
हातुमहमकोंस्त्रीजोनिकरिकें कहाविस्वासउपजावनकों
यहय्याप्रकार कहतहो मगाद्दीयहएकसखीप्रत्यें कहत
हे अवश्रीठाकुरजीआपुकहतहे जोहमारेबचनविना
हीहेसंबोधनआये: संबोधनविस्वासकोअर्थबीनासे
श्रोरस्वासन्यासे याप्रकारअर्थकरिकेंश्रीठाकुरजीआपु
कहतहेंजोमेरेबचनविनांहीहें अयेतुमकोविशिष्टक
हते विशेषहेसोविश्वासश्रमकरिकेंतुमकोंहोतहे १०३
श्लोक किमधिकमधिकं नये कुलांगनास्वंगनेहृशेवच
ने सोढुंसक्ताः परमितकमानिदराजसुते १०४ याको
अर्थ अवब्रजभक्तकहतहेजोअबतुमहमकोंबजतअ
धिकअधिककहालोहे जोकुलांगनास्वंगकुलांगनाव
करिकेंएताहमारेबचनसहिनसके पेयहहमक
हांकरेंश्रीनंदराजकेबेटाहो १०४ श्लोक गोकुलेश्वरा
गहंगतुमहृदाकुतः स्त्रियः वृंदाबने मगादृशादानंल
गतिमामकं १०५ याकोअर्थ संबोधनहें गोकुलेशतुम
जोहोसास्त्रीनकोंघरजांनक्योंनांहीदेतहो श्रीठाकुर
जीआपकहतहेंजोश्रीवृंदाबनविषेंमगनयनीनकों
हमारोदांनलगतहे १०५ श्लोक अस्तुतपूर्वमिदंननुकिं
तद्दानलगत्पहोकुत्र चराणिरसिकरेवापश्चाद्भुतस्त
दस्मोदोकं १०६ याकोअर्थ यहतोपहिलेंहमकबहूंनां
हीसुन्यो निश्चयतेदांनसोकहा दांनकोहेसोकहतहें
औरयहदांनलगतहे सोकहोकोनठौरलगतहे पावन
विषें अथवामाथेविषें अथवाहाथनविषें अथवापी

छिविषे सोहमकोंकहो १०६ श्लोक अंचलेनापिकंचुका
यद्गोपितमुरस्तव तस्मिन्क्षितिवदन्वीरः करेणास्पृशाड्
कूटं १०७ याकोअर्थ अबश्रीठाकुरजीआपकहतहेंजोकं
चुकीकेअंचलकरिकेंअथवाश्रमकंचुकीकरिकेंजोतुम्हारे के
उरस्थलविषेगोप्यछांकिरायेहे तुम ताकोहाथलगातय
हहे श्रृंगारवीरउद्भटनिसंकहायकरिकेंजोमहाधृ
भटमहाहोइसोईनटिकें जाकेआगेसोउद्भटउद्भरहोइ
हाथकरिकेंस्पर्शकरतभए १०७ श्लोक कथंकुलवधूज
नस्पृशासिहंतम मेस्खलेन भीतिमवलंबसेसकलसेत
वोप्युच्छ्रिताः सरोजदललोचनेस्खलत मित्यमेवांगनास्प
र्शामिसखितकदावसनसेतु रूध्यते १०८ याकोअर्थ
अबव्रजभक्तप्रश्नकरिकेंकहतहैं सोतुमक्योंकरिकेंकु
लवधूजितिकेमर्मस्थलविषेस्पर्शकरतहो तुमडरप
तनाहीहो निर्भयताकोआश्रयकरिकेंसर्वमर्यादाकी
औरउलंघनांकीनाहें ठाकुरजीआपबोलेजोहेकमल
दलदीर्घलोचनी मर्यादाछिरलरयाप्रकारहीयाहीस्थ
लमेअंगनास्त्रीनकोस्पर्शकरतहों हेसखीतुमकहाजो
तुमसबमर्यादाकउलंघी मेंतुम्हारेवस्त्रकीमर्यादाक
उलंघीहे १०८ श्लोक वचनोकोछिगुणित्समुतकरोषिको
मकरीवहतसेतुः त्वद्वचनसहक्रतंमकरणांछिगुणेंभ
वत्येव १०९ याकोअर्थ अबव्रजभक्तकहतहेंजोतुम्हारे
वचनकीउक्तिकहिवो ताकरिदुगणोकामकरतहे जैसें
सत्तीकीनांईमेंडमर्यादाकोकूलदूरिकरतहे अबश्रीठा
कुरजीआपुकहतहेंजोतुम्हारेबचनसोंसामर्थ्यकीयतें
जबहमारेऔरतुम्हारेबचनदोऊसाथकीयहे तोमेराक
रणोंदुगणोहीहोयतो व्रजभक्तकेवचनकहे औरक्रा
पुनेकरनकहाक्रियाकहीये भावबोधककाकोक्ति १०९

दा॰टी॰ श्लोक वाक्चातुरीधुरीणं जानीमस्त्वां तु नंदनन्दनपसूनुं श्राति
दुर्ल्ललितं परमिह दानं दधिपुष्कलं नैवं ११० याको अर्थ
वचन चातुरी माहरी एकली वचन चातुरी धुरीणा कहले
करि तो हम जाणे जो तुं मतो श्री नंदरायजन के पुत्र हो येत्र
त्यंत दुर्ल्ललित जो सुंदर नाही जो यह दही के दानविषें यह
दही को दान काहू नही सुन्यो नाही है ११ श्लोक किनालि
के रफल भार मुलां बुजाद्य पुंगीफलान्युत कुरंगमदनयामः
पदांकुराण्युत यतो लगाली हदानमनुद्भटं वदसि गोकुल
पालकत्वं १११ याको अर्थ हे अंबुजाक्ष कमल दीर्घलोचन
कहा हम नालीयर श्री फलको भारा भस्यो वे चलत हें उत्तक
हे कहा हें अथवा कहा हम सुपारी को रैमो भरि वे चलत हें
अथवा कस्तुरी ले जात हें अथवा पान लेके जात हें अथवा
कपूर अंबर लेके जात हें अथवा र सिमी चीर बेचिवे को ले
जात हें जाते यह [illegible] जो या प्रकार उद्भटनिस
कसुभट कहत हो तुम [illegible] गोकुल के पालक हो १११ श्लोक
गोपी भुगोरस [illegible] मादान मंगना भवंतः केकुल
स्त्रीपु [illegible] समर्थका ११२ याको अर्थ अब गोप बाल
क कहत [illegible] नाही गोपी विषें गोरस को ही हम ही
दां न लेत हें अब व्रजभक्त कहत हें जो तुम को न केवाल
कहो तुम कुल स्त्री विषें तुम को न हो जा वचन बोलत हो
११२ श्लोक विपिनचारिणो बारिसं स्थिता न वदसि वाक्
थैव वध्व वांगने इयद वध्यद स्त्वत्स्वरूप मित्यह हनो मया
साल मुत्तमं ११३ याको अर्थ जब बालक को या प्रकार कहो
तब श्री ठाकुरजी आपु कहत हें जो हे वध्व अंगने तुं मतो
श्री वृंदावन विषें वेचि जात हो और पास [illegible]
पे तुम्हारी स्थित है अथवा तुम ऐसें को [illegible]
गनयनी अब व्रजभक्त कहत हें जो [illegible]

मतुम्हारेस्वरूपकोनजांन्यो अबजांन्योहै जोयाप्रकारके
षेदकरिकेंकहतहें जोयहहे हा यहाहै हमएसोउसम
तुंम्हारोस्वरूपअवलोहमनजांन्यो ११३ श्लोक व्याज:परंसु
दरगोरसस्यक्रतोस्यमूल्यंकिमपीहवस्तु उर:स्थलीक
त्वनयस्यलक्ष्यं मदन्यपुंसानतुलक्ष्यमेव ११४ याकोअर्थ
श्रीठाकुरजीश्रापुकहतहेंजो सुंदरीयहतोगोरसकोमिसमा
त्रकीयोहे सोतोकीयोहे याकोमोलकहांकरे कछूयावस्तुको
मोलकीयोहे तुमउरस्थलविषेंस्थापनकरिकेंढांकिकरि
केलेकेंजातहो ताकोजोनांहीदिषांवनो अलक्ष्यनांहीदि
षांवनोंहें सोमातेंअन्यपुरुषहोइताकोनांहीदिषावनों
नमोरूकोदेषनों ११४ श्लोक सुसंतरंते न मागच्छा
म:परंपयादानं नोजानुकूलं मपितकुलावयंते ऽघदा
स्याम: ११५ याकोअर्थ व्रजभक्तकहतहेंजो हमतोनि
रंतरश्रीवृंदावनविषेंजातहें पेदूधकोदानन‌ही कदा
पिकवहूसुन्योंनांहीहै तातेंक्योंकरिहमतुमकूंदेंगे
नदेंगे ११५ श्लोक यद्यधावधिचोरिती त्वान दत्तमद्या
हमत्रापतस्ततू तांगृहीष्यामिसरोरुहाक्षिदातांपुरावि
श्रमलत्वयैव ११६ याकोअर्थ अवश्रीठाकुरजीश्रापुकह
तहेंजो अवयहसंबोधनजाते अवकीअवधिलोतुमनि
त्यदधिवेचिजाते सोदांनचोरीकीरी तिकरिकेंदांननदी
नोंहें अवमेंपाहिलेंजोचोरीकरिकेंनिगएहोसोसवदान
लेंऊंगा हेकमलाक्षी पाहिलोंएकहालाविश्रांमकरिकेंसुख
ताय पेतुम्हारेहीपाससोंलेऊंगो ११६ श्लोक गतलणावाहस
प्रउरखुरविन्हान्मपिवनेनद्रूस्यतेहंतकुलतरमिहगा
इतिश्रीगोविंद:प्रियवचनमाकर्ण्येसभयंतदा
...तिगोरसाएविधो ११७ याकोअर्थ ए
...श्रीठाकुरजीसोंकहो
...कनेंउपायकरिकें

दां·टी जो गायतोहरिगईहें अपरकहे पुरकेचिन्हहू वनवि
षे नांहे दोषियतहे येदकरिकेंकहत हेंजोवेगितुरतलेम
इहांआवो तदनंतर यह श्रीठाकुरजीजोहेंसोआपुने प्रि
यसषाकोप्रियवचनसुनिकेंभयसेंयुक्तहेतब गायकोंज
नावतउदातिकहतहें सुंदरगायकीरक्षाकीविधिउपाय
कीआज्ञादेतभएहें १७ श्लोक गतेषु खिलगोपेषु सष
मासीदितिप्रियं॥अलिप्रमुदिताःप्रोचुःप्रेमानिश्चायनिर्भयाः
१७ याकोअर्थ जबसबगोपगायनकीरक्षाकोंजातभएहें
ताविषेंश्रीगोपिकाजूकोंअपुनोअत्यंतप्रियइष्टवांछितहो
तभयोहे तबअत्यंतहर्षसेंयुक्तहोयकरिकें अत्यंतअति
शयप्रेम ओरनिर्भयहोयकरिकें इहप्रसंगकुंकहतहे १८
श्लोक विपरीतमहोवयमेकाकिन व्रजगोपनितंविनिचोर
जनाः विपिनेविजनेपतयन्नमदान्तर साधुजनःस्वयमे
षपरं १८ याकोअर्थ अहोहरि भएजो हेव्रजगोपनितं
बनीहो अहोयहबडोआश्चर्यहे जोयहतो विपरीतउलटी
भईजोयहतोमेंएकनिश्चयचोरभएहे श्रीठाकुरजीआप
एकांतबनविषेंश्रीजनकोंरोककरापीहें पयहआपसोंसा
धुजनमेंश्रेष्ठकहावतहें ओरहमसोंचोर १९ श्लोक
विपरीतभवतीनांधर्मोनहिमेसरोजमुग्धादृशः तर्हिल
ब्धोदानग्रहणायुक्तंवतास्माकं १९ याकोअर्थ अबश्रीठाकु
रजीआपकहतहे जोविपरीतकहतेविपरीतसुरतसों
तुम्हारोधर्महे हमारोधर्मनांहीहें हेसुंदरकमलनयनी
हो तवतोतुमपुरुषभएहो तबतोतुमकोंदानलेंनोंउ
चितहीहे इहप्रकारिकेंकहतहे जोहमारोदांनलेंनोंतुम
मकोउचितहीहे २० श्लोक वद्धोभवत्या कान्तैकाव
करैमिकितेन निजानुरूपं दानं वलात्कारीसुदयानुचे
वेदन्निंडुमुखीचुचुंब २० याकोअर्थ अबतुम होतहीहे

और मेरूं सासूको जो ही हूं तो ऐसेके लोक कहा करूं ताकरि
मेंआपुने अनुरूपदांनजोहे सोवला द्वारविषें [illegible] गोही
यांप्रकारऊंचेश्वरकरिकें कहतहें चंद्रवदनीकोश्रीठा
कुरजीचुंबनदेतभएहें १२१ श्लोक कथमेवकुलस्त्रीयुक
रांबिंबिजनेवनेवने इत्थमित्थमितिस्मेरास्मितः प्रादान्न
खंमुखे १२२ याकोअर्थ श्रीव्रजभक्तकहतहें जोऐसो
करिकैंयाप्रकारकुलस्त्री॥विषेंएकांतवनविषेंयाप्रकार
क्योंकरतहो श्रीठाकुरजीआपबालेजा यायायाकरिकें
रिकेंचुंबनकोदोवारआभिनवदेषाबलफिरिचुंबनदेतहें
याप्रकारकांमकरिकें मंदहास्यकरतहें मुखकमलविषें
हाथकरिकेंगालपकरिनयनोंमदेतभए १२२ श्लोक श्री
गगलवदाननविलक्षणस्नेहसेमताबूलराखितकपोलयु
गोनवाध सौंदर्यसी [illegible] किंवक्षसा चमुक्ता निजंगर
हमुदारकथंगामिनां १२३ याकोअर्थ श्रीव्रजभक्तकहे
तहेंजो हे [illegible] मुखकमलतेंविलक्षणअद्भुत श्री
साधारणपरि [illegible] मेरो दियेलेतोयेसेपरिमलसुवा
सतयाहे औरतुम्हारेतांबूलकेपीककीरेषादेषीयतहे
सायुक्तआदिदोऊमेरेगंडस्थलभएहें औरसौंदर्यकी
सीमानषकरिकेंसंकितनपहतकरिकें शंकितभयो
हे वक्षस्थलइलनेंयुक्तसहतहे उदारसुंदरमेंआपुनेघ
रक्योंकरिजांऊंगी १२३ श्लोक कथंहारःहुणःकथमुवल
यानांविरलताविलंबःकेनासीद्दधिकलशिकाकुत्रकिमभू
त प्रियेत्यंप्रष्टाहंनिजगुरुजनाग्रेसरजनैः किमाख्यास्ये
त्विणापरिजनवडाजीवननिधि १२४ याकोअर्थ जबहें
मा [illegible] कमकोपूछेंजोतुम्हारेमोतीनकेहारकहांटूटे
औ [illegible] कीरलम्हारीन्यारीढोलीक्यो कहुंकेहा
मईहे क्यो [illegible] तोसवारेआवते आजुएतोविलंबकहा

दं·टी· नयो सोक्यों करिकें भयो है कहां रहे है ते तुम्हारी दधि कोल
सिको कहां कहां होत भई है हमारे श्रीयभरतार या प्रकार
पूछें हमकों तब आपन गुरजन सासु ससुर देवर जेठ दे
षत सब ही चकि तब हम कहा कहेंगे स्त्रीन के जीवन है सो
परजन वस पराधीन है जीवने की विध १२४ श्लोक सत्यं
स्त्रीणां जीवन मन्या यत्ते परं न गोपीनां मदधीन मेव किंतु
प्रियसखि तत्ते कुतो भीतिः १२५ याको अर्थ अब श्रीठाकुर
जी आप कहत हैं जो तुंम सत्य कहत हो जो स्त्रीन के जीवन
पराये आधीन है सो अन्य स्त्रीन को है ये गोपीन को नांही है
गोपीन को जीवन सो मेरे ही आधीन तो कहा है हे प्रियसखी
ताते तुमको हते डरपत हो १२५ श्लोक गोकुलमखिलं ता
वकमनन्यशरणं विशेषतो गोप्यः किंतु लामिह किं विल
श्चिन्न्याद्दियं भीतिः १२६ याको अर्थ अब श्रीगोपिकाजू क
हत है जो संपूर्ण गोकुल [illegible] है संपूर्ण गोकुल को एक
तुंम बिना तिरस्कार [illegible] ही है अनन्यशरणा है एक तुं
म ही रक्षक [illegible] है तामें श्रीगोपिकाजी विशेषतः अ
नन्यशरणा हैं ता [illegible] को भय कहा है जो मति यह तुंम को
कोऊ कछू कहे [illegible] हमको भय है १२६ श्लोक वशीकर्तुं प्र
विष्टं वाणी गोविंद मानसं नाशक्तो सुनरायांतु प्रेम पू
रायतः १२७ याको अर्थ तब ऊपर ले सुंदर में कह्यो जो मते
कोऊ तुंम को कहे यह हमको भय है यह सुंदरीन की वाणी
है सो श्रीगोविंद के मन को वस करिबे को श्रीठाकुरजी के
मन को बस करिबे को श्रीठाकुरजी के मन भीतर प्रविष्ट
भई है सो वाणी फेरि आवन को सामर्थ्य नांही होत भई है
केउ नेके अंतर प्रेम को पूरता में तें फिर निकसी भीत
रही रही १२७ श्लोक [illegible] बूपेवा [illegible] कगोपिकि
नैवः नान्यः शरणो निकाधि किं [illegible] बल [illegible] नाथ १२८

याको अर्थ ॥ अब व्रजभक्त कहत हैं श्री ठाकुरजी को जो तुम
गोरस के दान को मिस करिके काहे को कहत हो तुम अप्र
पुनें भाव को प्रकट करोगे के नांही हे कहा चित के होगे जो सो
कुसुं नें तातें नाही करत है तातें इहां अन्य कोऊ नांही सुन
तहे नाथ तुम कहा भए हे को अवलंबन करत हो १२८ श्लो
क ॥ कुचगिरिदधिभाजनं शिरसि ले मनाग्द्रवस प्रह्वत
न पारयेविपुलभारमाभातिमे नदत्रावि निधेहित तद्रण
मपाकुरुश्रातिमप्प हे मलयमारुतो वहति सो पियात्व
थितो १२९ याको अर्थ ॥ अब श्री ठाकुरजी आपु कहत हैं
जो हे कुचगिरि दधि को मोर तुम्हारे माथ परहै सो तातें नेक
हूं देषिवे को हू षेद करिके कहत है जो पार नाही पावत नें
क देषिवे को हू सामर्थ्य नाही है विपुल कहे बडो भार मो
को भाषत है तातें इहां तुम धरो तहां एक क्षण माथे तें भा
र दूरि करो यह है सो मलयागिरि संवंधी त्रिविध सुगंध
वायु वहत है सो कुच ही तुम्हारे आवत है माथे तें भा
र उतारि के विश्राम करो १२९ श्लोक ॥ कुसुमसुकुमारां
गश्रीमत्युदारतरमंचलकं उरसि करं वा सोपतद्यपनस
हामहे क्षणमिहतदस्माकं हस्ते कुरु व्रजवद्ध्वीनयन
सपर्योनीरनाप्पत्वमस्यातिसुंदर १३० याको अर्थ ॥ अब व्र
ज भक्त कहत हैं जो हे कुसुम सुकुमारांगे फूल जैसो सुकु
मार अंग है कहा तुम्हारो है एतो उन्नासो भाके मद करिके
उदार तर तुमने कहूं तुम्हारे उरस्थल विषें जो श्रेष्ठ व
स्त्र पीतांबर रूप यह है तह मनां हा सहि सकत है यह सु
नि श्री ठाकुरजी प्रत्येक कहत है सो एक क्षण तुम्हारो यह
वस्त्र हमारे हाथ विषें श्री व्रज वधू मीन के नेत्र रूपी जो
हे नाथ तुम जो अत्यंत सुंदर रूप जो नय
मनी हो जीवन रूप तुम हो १३० श्लोक ॥ तमु

दां·टी· त्तारयेतत्पयोभाजनं स्वं सरोजाक्षि दहास्तु दानं मदीयं ब्र
जेत्रात्व[illegible]योत्तरीयं नु कस्मै ददस्यैतदेवं कथं त्वन्नियोगा
त् १३२ याकोअर्थ अब श्रीठाकुरजी आपु कहत हैं जो तुम
हे सायाते आपुने दूध भाजन मांथेतें उतारो हे सरोजाक्षी
सी घ्रबोगाही हमारो दान देऊ तब ब्रजभक्त कहत हैं जो हे
ब्रजेश्वर ब्रज के ईश्वर तुम्हारी उत्तरीय रू सो तो यह हम कोन
कों दें एतत्या प्रकार तुम कहोता यह तुम्हारी उत्तरीय हम
कोन कों दें त्वन्नियोगात् कहत हें १३३ श्लोक धृत्वा शिरस्यंच
लसं करेणा स्थिते प्रियकस्य पुरो वदामि मगनं भवेत्येत
दिति ब्रुवाणो न्यपातय ब्रज्ञाजनमेकमुर्व्या १३२ याकोअ
र्थ तदनंतर श्रीठाकुरजी आपने ब्रजभक्तन के मांथे ऊपर ऊ
परके कलश की स्थिति सो श्रीठाकुरजी नें आपुनें लपक
रिकें धरी सो प्राण[illegible] हाथ करिकें कहत हैं जो यह क
लस फूटत है [illegible] आगे कहे एतत्य हलो याप्र
कार कहत [illegible] ताक भाजन कों गिरावत भए हैं सो
उदति कहैं पृथ्वी १३३ श्लोक तदाचंद्रावल्या निजभुजयु
गेन प्रियतम[illegible]वेष्ट्य संप्रोक्तं ब्रजमविरतोगाढकथय
न गांतुं शक्तो यं त्वदमि मुखमिलुञ्जदलरं निसम्यैकाच्छ
ब्रजमाधिकृता नाधररसे १३२ याकोअर्थ तब हे सो श्री
चंद्रावलीजू अपुने दोऊ हस्त करिकें आपुने प्राणप्रिय
तम कों पकरि करि कहत भई हैं कहूं जातु मवेगि ब्रज में
जाय कें कहा श्रीठाकुजी आप कहो तो एक सखी कहत है जो य
श्रीठाकुरजी तुम्हारे मुख के आगे ते कहा जाय न सके गे
या करिकें उद्धत रहे सुन करी एक जो अधररस की अ
धिकारणी न हुती सो जात भई १३३ श्लोक म[illegible]स्वेक
मला क्षि किं वाऽनयाधृतो संवदत्त्वमेव स[illegible]जागर
को विराधो विनाभवत्सीत दुकूलनीया १३४ याकोअर्थ अ

वश्रीठाकुरजी आप एकसषीसों कहत हें ज्यो मो करिकें य
हधरीहे हे कमलाक्षिके अथवा अनयाकहत हें जो इनको
धर्यो सो ताको तु ही कहे व हे सषीकहत हे जो हे नागर
समुच्चय तुं मउन कों धारि के अथवा जहां उन तुमनें ध
रे तो कहा विरोध हे विना तुम्हारा पीतांवरको रंजनकीनी
वी १२४ श्लोक त्वमेव भव मध्यस्थ वादिनोरावयोः सखि
युवयोर्विशानी सत्रां तरं नास्ति कमेस्थितिः १२५ याकोअ
र्थ अथवा श्रीठाकुरजी यासषीकों कहत हें जो तुमही हम
दोऊवादी हें ताबीचमध्यस्थ होरावयोः कहे हम दोऊवादी हें
ता बिचमध्यस्थ होरावयो कहे हम दोऊवादी हें हे सषी
सषीसों कहत हे जो तुं मदोऊवीनकी करु कमलनी
में केनालमें कोएक सत्र तंतु र ताकी बीच अंतरायनाही
हें तो तहां मेरी स्थिति कहांहोय १२५ श्लोक खिन्ना भवति
सखीयं त्वदंगसंगाभिलाषया भग तत्कुरु मनोनुरं
जनमस्याधैर्यप्रकाशकं १२६ याको अर्थ सषी श्रीठाकु
रजी प्रत्यें कहत हे सो यह सषी हे सो खिन्न होत हे हे शुभ
ग सुंदर सौभाग्यमानी तुम्हारे अंगके संगकी अभिलाख
विषें हे शुभग तातें तुम याको मन रिझावो रंजन करो या
कोअवयह धीर्य करिबेको हे यहअशक्त हें यह सरवी
१२६ श्लोक त्वत्संगागमनस्य प्रियसारिवफलमेतदविरा
सीन्नः अन्याम पिनिज सदशी कर्तुं वांछस्ययेकिंनु १२७
याको अर्थ अब श्रीचंद्रावलीजू यह सषी प्रत्ये कहत हे
जो हे प्रिय सषी तेरे संगआइबेको हमें य सफल प्रगट भ
यो हे यह फल पायो आपसक हम आपु जैसी करिबेको कहत
वां [illegible] कों आप जैसी कीयो चाहत हे १२७ श्लोक
तद [illegible] स्पर्श करत प्रश्नारत कर नवप्रणोयपरा ई
दृशः [illegible] ड: प्रियं १२८ याको अर्थ तब श्रीठाकुरजी आप

दां॰टी॰ हरषसें आपुकों आपुनों स्पर्स करनों विषें आपुनें हाथ प्र
सारयो है तिनमनें जो प्रेम पीता ताकरिकें नये प्रेमकें पूर
करिकें आर्द्र हरस आनुगेंउ कहे हें सब प्रियाश्रीगोपिकाजे
नको १३८ श्लोक मामामानदमास्पत्रोतिवचसात्तावारये
त्यः प्रियंसाकूतं करपछ्रवे पिचिबुके वक्षस्थले प्पस्पृश
न् तत्कालीनविलक्षणोद्गणावस्था श्लाधा प्रियप्रेयसाः स
त्रैनापितयाविधेनवचनेनासंस्तदातकृता: १३९ याको
अर्थ अबजब श्रीठाकुरजीनें आपको स्पर्स करिबेकों हाथ
पसार्योहे तब गोपिकाजनलालीजो हे मानंदमानके दे
द्वार मतिमति हमकों स्पर्स मतिकरो यह वचन करिकें
सातेगोपिकाजून निवारण करत भई श्रीठाकुरजीकों नि
वारण करत आपुनें गिरिको पुनों सभावसह अभि
प्राय कोमन अभिलषित मनभावा करिकें आपुनें करप
ल्लव करिकें श्रीठाकुरजीको हाथ विषें औरचिबुक विषें
औरवक्षस्थल विषें स्पर्स लोक रिकें स्पर्स करत भई
हे तास मय विपें जैसा क्रिया जो श्री ठाकुरजी ताको वि
लक्षणाकों मनकों आसक्त करिकें जोई क्षण चितेवेकें वस
करिकें तेसव प्रेयसा श्रीगोपिकाजीनको स्पर्स करतहू त
बसब सुंदरी श्रीठाकुरजीकें न सहोतभईहें १३९ श्लोक
पल्लवाचलं विविधपदमयप्रसून श्रीस्मारिल स्मरानिकेत
नतोरणस: वामेनचारुनखरेणकरेणगर्छलांग्राह
गच्छकथमालिगमिष्यसिलं १४० याको अर्थ तब श्रीठाकु
रजी आपक साकहल भए हें सो कहत हें जो श्रीठाकुरजी
अंचल पकरिकें जातिभांतिके पाटके फूंदना नीवीकी फु
फुंदी ताके अंचलकों धारिकरिकें सो फुंफुंदीके फुंदनाके
सहे स्मरजो कंदर्प ताको निकेतन जो घरता के तोरनकी
सोभाकूं स्मारक हे ताकों स्मारक रहें ताको श्रीठाकुरजी आ